पु•ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –IX

HINDI

APRIL to AUGUST -MONTH

SYLLABUS

2020

Chapters:-

Ch-1-Dhool
Ch-2-Dukh ka adhikaar
Ch-4-Tum kb jaoge Aatithi
Ch-9-Raidaas
Ch-10-Rahiim
Ch-3-Everest –Meri shikhar yatraa
Ch-1-Sanchayaan-1-Gillu
Ch-12-Ek phool ki chah
Ch-2- Sanchayaan-2-Smriti

***-Vyaakaran and Compositions**

गद्य-भाग

पाठ -1

(धूल)

*-पाठ 'धूल' के लेखक श्री रामविलास शर्मा है|

*-लेखक का परिचय:-आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद डॉ॰ **रामविलास शर्मा** ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं, जो भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं।उनकीआलोचना प्रक्रिया में केवल साहित्य ही नहीं होता, बल्कि वे समाज, अर्थ, राजनीति, इतिहास को एक साथ लेकर साहित्य का मूल्यांकन करते हैं।

पाठ का सार:-

'धूल' पाठ में लेखक रामविलास शर्मा ने धूल के महत्व का वर्णन किया है। लेखक स्वयं गाँव से जुड़े हुए व्यक्ति हैं। आज के लोगों द्वारा धूल की अनदेखी उन्हें अच्छी नहीं लगती है। उनके अनुसार गाँव में, पहलवानों के अखाड़े में, किसानों के लिए और बच्चों के लिए गोधूलि बहुत महत्वपूर्ण है। परन्तु विडंबना देखिए कि शहरों में लोग इस धूल को गंदगी मान कर इससे बचने का प्रयास करते हैं। लेखक को यह बात बुरी लगती है। इसलिए इस पाठ में लेखक ने धूल के महत्व, उसकी विशेषता और भारत के गाँवों में धूल की महिमा का वर्णन किया है। उन्होंने अलग-अलग उदाहरणों द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि धूल कितनी अमूल्य धरोहर है, हम भारतीयों के लिए। उन्होंने पूरे पाठ में हमारे जीवन में धूल की उपस्थिति का वर्णन किया है।

***-मिटटी और धूल का अर्थ:-**प्रस्तुत पाठ में मिटटी के गुणों को प्रस्तुत किया गया है| अखाड़ा प्रमी को अखाड़े की मिटटी देवताओ पैर चड़नेवाली पवित्र मिटटी प्रतीत होती है|

धूल का भौतिक,रासायनिक तत्व के साथ साथ सांस्कृतिक विरासत का प्रीतिक भी है| यह धूल साधारण धूल नहीं है|

इसकी मिटटी में हमारी सभ्यता पनपी है| यह भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता है| यह मिटटी ही इसकी पहचान करती है

पृथ्वी का महत्वपूण तत्व है मिटटी| मिटटी की आभा धूल से है| मिटटी के रंग रूप की पहचान धूल से है|

पूरी प्रकृति व् स्रष्टि का जन्म धूल और मिटटी से हुआ है|

मिटटी में यदि गुण न हो तो क्या किसान इसे अपनी माँ मानता ,इससे दिनरात खेती कर सबका भरण पोषण कटा?

एक सैनिक इस मिटटी का तिलक लगा कर अपनी जान इस मिटटी के लिय नयोछावर करता?

एक पहलवान क्या अखाड़े की मिटटी को अपनी माँ का आंचल समझ कर मिटटी को अपने शारीर पर लपेट कर दुश्मन को धूल चटाता?

धूल और मिटटी में व्ही सम्बन्ध है जो देह और प्राण में होता है| जो शब्द और रस में होता है|

***-धूल और गोधुलि :-**

*-धूल एक अल्हड बच्चे की तरह हर जगह ओद्ती रहती है|

*-गिधूली वः ओद्ती हई धूल है जो गाय के खुर से ओद्ती है| जब शाम को गाँव के पशु चार के गाँव को लौटते है, तब धूल उनके पैरो से उडती हुई दूर से नजर आती है| यह धूल गाँव की सम्पन्नता का प्रतिक है|

*-लेखक ने दूसरा पक्ष यह रखा है कि जब यही धूल किसी के माथे पर लगती है तो मन में देश भक्ति की भावना जगती है |

*-यही धूल और मिटटी से श्रद्धा, प्रेम, आदर और स्नेह का भाव जब चरम पर पहुँचती है तब हम आदरपूर्वक अपनों के बडो के और गुरुजनों के चरण छु कर आशीर्वाद लेते है

*-यही धूल जब इक्सी मासूम बच्चे के मुखड़े पर लगती है,तब उसका मुख का सौदर्य और भी निखर जाता है

*-उसे किसी नकली साज सज्जा के साधनों की जरुरत नही होती |

*-लेखक इस बात से दुखी है कि आज की पढ़ी लिखी सभ्यता एक सुख से वंचित रह गी है| आज की सभी जनता धूल व् मिटटी की उपेक्षा करते है| आज के आधुनिक लोग इस मिटटी धूल को प्रदुषण मानते है|

*-आज के बच्चे धूल ,मिटटी जैसी इस प्रकृतिक चीज से अपने को दूर रखते है|

*-लेखक कहते है कि जो बचपन मिटटी में नही बिता वः बचपन ही क्या,यह दुर्भाग्य है|

*-हम चमकते हीरे की खरीदारी खूब उची कीमत से करने की इच्छा रखते है,परन्तु हम सब भूल जाते है किचमकता हुआ हीरा मिटटी में दबे कोयलों से ही बनता है ,इज्स मिटटी को हम हाथ तक लगाना पसंद नहीं करते है| यदि सभी ऐसा सोचने लग जाए तो क्या होता जब किसान खेतो में. न जाता ,कहां से हम सब का पेट भरता सभी लोगो का भरण-पोषण कैसे होता| यदि कुम्हार भी मिटटी को हाथ न लगाता तो सुन्दर कलाक्रति ,शिल्पकारी,मिटटी के सुंदर बर्तन हमे देखने को नही मिलते | क्या हमारी सभ्यता पहचान पा सकती थी|

Þ-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. हीरे के प्रेमी उसे किस रुप में पसंद करते हैं?

उत्तर:- हीरे के प्रेमी उसे साफ़ सुथरा खरादा हुआ, आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ पसंद करते हैं।

2. लेखक ने संसार में किस प्रकार के सुख को दुर्लभ माना है?

उत्तर:- लेखक ने संसार में अखाड़े की मिट्टी में लेटने, मलने के सुख को दुर्लभ माना है। यह मिट्टी तेल और मट्ठे से सिझाई जाती है और पवित्र होती है। इसे देवता के सिर पर भी चढ़ाया जाता है। ऐसी इस अखाड़े की मिट्टी को अपनी देह पर लगाना संसार के सबसे दुर्लभ सुख के समान है।

3. मिट्टी की आभा क्या है? उसकी पहचान किससे होती है?

उत्तर:- मिट्टी की आभा का नाम 'धूल' है, उसकी पहचान धूल से ही होती है।

4. धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?

उत्तर:- धूल का जीवन में बहुत महत्व है। माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। विशेषकर शिशु के लिए। माँ की गोद से उतरकर बच्चा मातृभूमि पर कदम रखता है। घुटनों के बल चलना सीखता तब मातृभूमि की गोद में धूल से सनकर निखर उड़ता है। यह धूल जब शिशु के मुख पर पड़ती है तो उसकी शोभा और भी बढ़ जाती है। धूल में लिपटे रहने पर ही शिशु की सुंदरता बढ़ती है। तभी वे धूल भरे हीरे कहलाते हैं। धूल के बिना शिशु की कल्पना ही नहीं की जा सकती। धूल उनका सौंदर्य प्रसाधन है।

5. हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है?

उत्तर:- हमारी सभ्यता धूल से बचना चाहती है क्योंकि वह आसमान को छूने की इच्छा रखती है। धूल के प्रति उनमें हीन भावना है। धूल को सुंदरता के लिए खतरा माना गया है। इस धूल से बचने के लिए ऊँचे-ऊँचे आसमान में घर बनाना चाहते हैं जिससे धूल से उनके बच्चे बचें। वे बनावट-श्रृंगार को महत्त्व देते हैं। वे कल्पना में विचरते रहना चाहते हैं, वास्तविकता से दूर रहते हैं।

6. लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता है?

उत्तर:- लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर लगी धूल को श्रेष्ठ इसलिए मानता है क्योंकि इससे उनका सौंदर्य और भी निखर आता है। यह शिशु की सहज पार्थिवता को निखारती है। यह धूल उनके सौंदर्य को और भी बढ़ा देती है। बनावटी प्रसाधन भी वह सुंदरता नहीं दे पाते।

7. लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है?

उत्तर:- लेखक धूल और मिट्टी का अंतर शरीर और आत्मा के समान मानता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में देह और प्राण, चाँद और चाँदनी के समान का अंतर है। मिट्टी की आभा धूल है तो मिट्टी की पहचान भी धूल है। मिट्टी में जब चमक उत्पन्न होती है तो वह धूल का पवित्र रूप ले लेती है।

8. ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है?

उत्तर:- ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के सुंदर चित्र प्रस्तुत किए है –

• अमराइयों के पीछे छिपे सूर्य की किरणें धूल पर पड़ती है तब ऐसा प्रतीत होता है मानो आकाश पर सोने की परत छा गई हो।

• सांयकाल गोधूलि के उड़ने की सुंदरता का चित्र ग्रामीण परिवेश में प्रस्तुत करती है जो कि शहरों के हिस्से नहीं पड़ती।

• शिशु के मुख पर धूल फूल की पंखुड़ियों के समान सुंदर लगती है। उसकी सुंदरता को निखारती है।

• पशुओं के खुरों से उड़ती धूल तथा गाड़ियों के निकलने से उड़ती धूल रुई के बादलों के समान लगती है।

• अखाड़े में सिझाई हुई धूल का अपना प्रभाव है।

9. 'हीरा वही घन चोट न टूटे' – का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- "हीरा वही घन चोट न टूटे"- का अर्थ है असली हीरा वही है जो हथौड़े की चोट से भी न टूटे और अटूट होने का प्रमाण दे। हीरा हथौड़े की चोट से भी नहीं टूटता परन्तु काँच एक ही चोट में टूट जाता है।

हीरे और काँच की चमक में भी अंतर है। परीक्षण से यह बात सिद्ध हो जाती है। इसी तरह ग्रामीण लोग हीरे के समान होते हैं- मजबूत सुदृढ़। अर्थात देश पर मर मिटने वाले हीरे अपनी अमरता का प्रमाण देते हैं। वह कठिनाइयों से कभी नहीं घबराते।

10. धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि का रंग एक ही है चाहे रुप अलग है। धूल यथार्थवादी गद्य है तो धूलि उसकी कविता। धूली छायावादी दर्शन है और धूरि लोक-संस्कृति का नवीन जागरण है। 'गोधूलि' गायों एवं ग्वालों के पैरों से उड़ने वाली धूलि है। इन सब का रंग एक ही है परंतु गोधूलि गाँव के जीवन की अपनी संपत्ति है।

11. 'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- लेखक ने पाठ "धूल" में धूल का महत्त्व स्पष्ट किया है। लेखक आज की संस्कृति की आलोचना करते हुए कहता है कि शहरी लोग धूल की महत्ता को नहीं समझते, उससे बचने की कोशिश करते हैं। जिस धूल मिट्टी से हमारा शरीर बना है, हम उसी से दूर रहना चाहते हैं। परंतु आज का नगरीय जीवन इससे दूर रहना चाहता है जबकि ग्रामीण सभ्यता का वास्तविक सौंदर्य ही "धूल" है।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

1. फूल के ऊपर जो रेणु उसका श्रृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है।

उत्तर:- इस कथन का आशय यह है कि फूल के ऊपर अगर थोड़ी सी धूल आ जाती है तो ऐसा लगता है मानों फूल की सुंदरता में और भी निखार आ गया है। उसी प्रकार शिशु के मुख पर धूल उसकी सुंदरता को और भी बढ़ा देती है। ऐसा सौंदर्य जो कृत्रिम सौंदर्य सामग्री को बेकार कर देता है। अत: धूल कोई व्यर्थ की वस्तु नहीं है।

2. 'धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की' – लेखक इन पंक्तियों द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर:- इस पंक्ति का आशय यह है कि वे व्यक्ति धन्य हैं जो धूरि भरे शिशुओं को गोद में उठाकर गले से लगा लेते हैं और उन पर लगी धूल का स्पर्श करते हैं। बच्चों के साथ उनका शरीर भी धूल से सन जाता है। लेखक को 'मैले' शब्द में हीनता का बोध होता है क्योंकि वह धूल को मैल नहीं मानते। 'ऐसे लरिकान' में भेदबुद्धी नज़र आती है। अत: इन पंक्तियों द्वारा लेखक धूल को पवित्र और प्राकृतिक श्रृंगार का साधन मानते हैं।

3. मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में।

उत्तर:- लेखक मिट्टी और धूल में अंतर बताता है परन्तु इतना ही कि वह एक दूसरे के पूरक हैं। मिट्टी की चमक का नाम धूल है। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। जिस प्रकार शब्द से रस, देह से प्राण, चाँद से चाँदनी अलग कर देने पर नष्ट हो सकती है,उसी प्रकार मिट्टी के धूल से अलग हो जाने पर वह नष्ट हो जाएगी।

4. हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।

उत्तर:- आज के युग में देशभक्ति की भावना का रूप ही बदल गया है। लेखक देशभक्ति की बात कहकर यह कहना चाहता है कि वीर योद्धा अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं,धूल मस्तक पर लगाते हैं, किसान धूल में ही सन कर काम करता है, अपनी मिट्टी से प्यार, श्रद्धा रखता है। उसी तरह हमें भी धूल से बचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अगर माथे से नहीं लगा सकते तो कम से कम पैरों से तो उसे स्पर्श करें। उसकी वास्तविकता से परिचित हो।

5. वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा।

उत्तर:- हीरा बहुत मजबूत होता है। इसलिए हीरा ग्रामीण सभ्यता का प्रतीक है। काँच शहरी सभ्यता का प्रतीक है। हीरा हथौड़े की चोट से भी नहीं टूटता परन्तु काँच एक ही चोट में टूट जाता है। हीरे और काँच की चमक में भी अंतर है। परीक्षण से यह बात सिद्ध हो जाती है। इसी तरह ग्रामीण लोग हीरे के समान होते हैं – मजबूत सुदृढ़। समय का हथौड़ा इस सच्चाई को सामने लाता है। अर्थात देश पर मर मिटने वाले हीरे अपनी अमरता का प्रमाण देते हैं।

गध-भाग

पाठ-2

(दुःख का अधिकार)

लेखक का परिचय:-यशपालजी का जन्म फिरोजपुर छावनी में १९०३ में. हुआ था |यशपालजी यह मानते है किसमाज को उन्नत या आच्चा बनाने के लिय एक ही रास्ता है सामाजिक समानता के साथ साथ आर्थिक समानता | प्रस्तुत खानी में देश में फैले अंधविश्वास और ऊंच नीच के भेद भाव को बताते है| वह कहते है कि दुःख की अनुभूति सभी को एह समान होती है | यह खानी धनि लोगो की अमानवीयता और गरीबो की दयनीय दशा को उजारार करती है| यह सही है कि इंसान पैर जब दुःख पड़ता है तो वः टूट जाता है| इंसान उस दुःख का मातम मनाना चाहता है| हमारे देश गरीबो को दुःख मनाने या जताने का भी अधिकार नही है और दुःख मनाने की फुर्सत भी नही है|

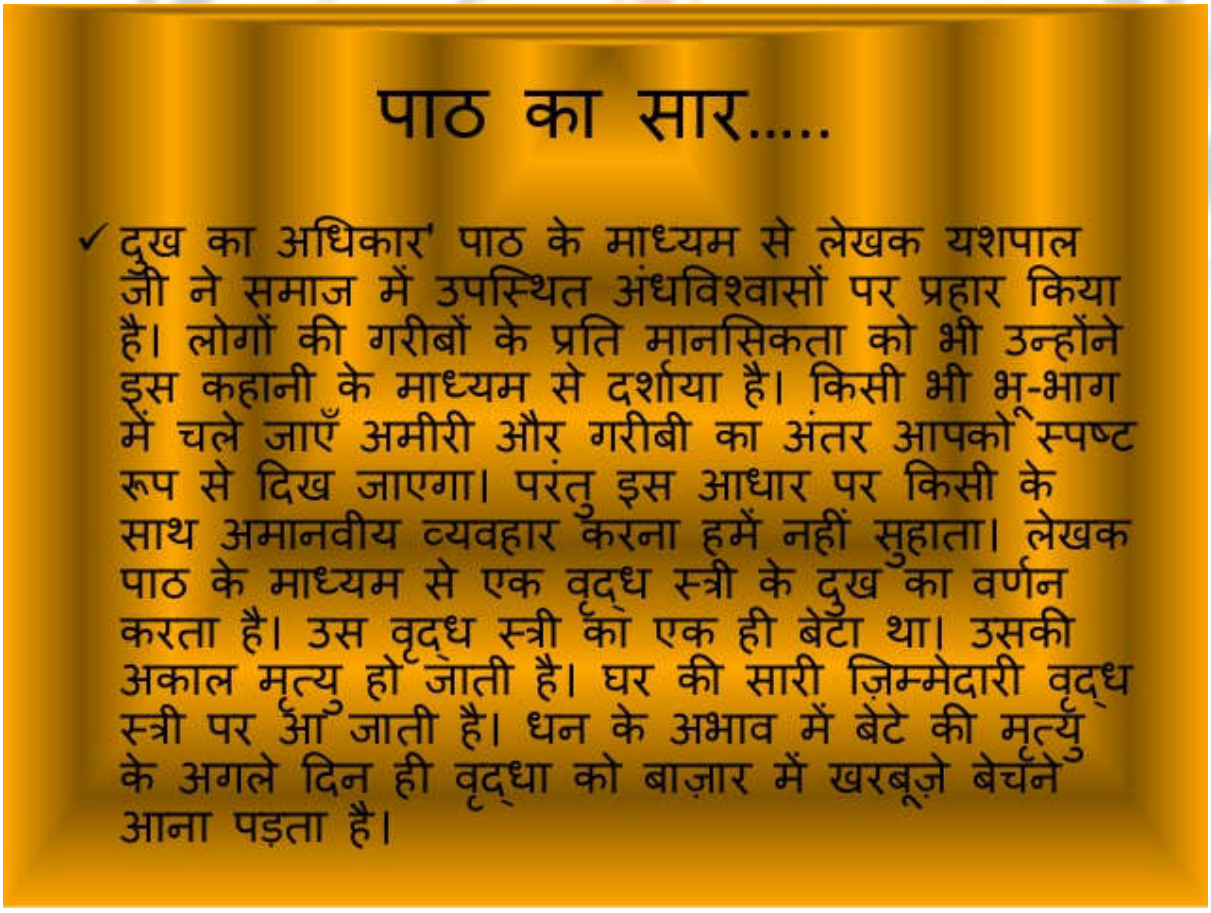

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

उत्तर:- किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें समाज में उसका दर्जा और अधिकार का पता चलता है तथा उसकी अमीरी-गरीबी श्रेणी का पता चलता है।

2. खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूज़े क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तर:- उसके बेटे की मृत्यु के कारण लोग उससे खरबूजे नहीं खरीद रहे थे।

3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर:- उस स्त्री को देखकर लेखक का मन व्यथित हो उठा। उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी।

4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर:- उस स्त्री का लड़का एक दिन मुँह-अंधेरे खेत में से बेलों से तरबूजे चुन रहा था की गीली मेड़ की तरावट में आराम करते साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उस लड़के को डस लिया। ओझा के झाड़-फूँक आदि का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

5. बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता?

उत्तर:- बुढिया का बेटा मर गया था इसलिए बुढ़िया को दिए उधार को लौटने की कोई संभावना नहीं थी। इस वजह से बुढ़िया को कोई उधार नहीं देता था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –

6. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?

उत्तर:- मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्व है। पोशाकें ही व्यक्ति का समाज में अधिकार व दर्जा निश्चित करती हैं। पोशाकें व्यक्ति को ऊँच-नीच की श्रेणी में बाँट देती है। कई बार अच्छी पोशाकें व्यक्ति के भाग्य के बंद दरवाज़े खोल देती हैं। सम्मान दिलाती हैं।

7. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर:- जब हमारे सामने कभी ऐसी परिस्थिति आती है कि हमें किसी दुखी व्यक्ति के साथ सहानुभूति प्रकट करनी होती है, परन्तु उसे छोटा समझकर उससे बात करने में संकोच करते हैं।उसके साथ सहानुभूति तक प्रकट नहीं कर पाते हैं। हमारी पोशाक उसके समीप जाने में तब बंधन और अड़चन बन जाती है।

8. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर:- वह स्त्री घुटनों में सिर गड़ाए फफक-फफककर रो रही थी। इसके बेटे की मृत्यु के कारण लोग इससे खरबूजे नहीं ले रहे थे। उसे बुरा-भला कह रहे थे। उस स्त्री को देखकर लेखक का मन व्यथित हो उठा। उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी। परंतु लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि उसकी पोशाक रुकावट बन गई थी।

9. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर:- भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में खरबूज़ों को बोकर परिवार का निर्वाह करता था। खरबूज़ों की डलियाँ बाज़ार में पहुँचाकर लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता था।

10. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर:- बुढ़िया बेटे की मृत्यु का शोक तो प्रकट करना चाहती है परंतु उसके घर की परिस्थिति उसे ऐसा करने नहीं दे रही थी। इसका सबसे बड़ा कारण है, धन का अभाव। उसके बेटे भगवाना के बच्चे भूख के मारे बिलबिला रहे थे। बहू बीमार थी। यदि उसके पास पैसे होते, तो वह कभी भी सूतक में सौदा बेचने बाज़ार नहीं जाती।

11. बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर:- लेखक के पड़ोस में एक संभ्रांत महिला रहती थी। उसके पुत्र की भी मृत्यु हो गई थी और बुढ़िया के पुत्र की भी मृत्यु हो गई थी परन्तु दोनों के शोक मनाने का ढंग अलग-अलग था। धन के अभाव में बेटे की मृत्यु के अगले दिन ही वृद्धा को बाज़ार में खरबूज़े बेचने आना पड़ता है। वह घर बैठ कर रो नहीं सकती थी। मानों उसे इस दुख को मनाने का अधिकार ही न था। आस-पास के लोग उसकी मजबूरी को अनदेखा करते हुए, उस वृद्धा को बहुत भला-बुरा बोलते हैं। जबकि संभ्रांत महिला को असीमित समय था। अढ़ाई मास से पलंग पर थी, डॉक्टर सिरहाने बैठा रहता था। लेखक दोनों की तुलना करना चाहता था इसलिए उसे संभ्रांत महिला की याद आई।

12. बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- धन के अभाव में बेटे की मृत्यु के अगले दिन ही वृद्धा को बाज़ार में खरबूज़े बेचने आना पड़ता है। बाज़ार के लोग उसकी मजबूरी को अनदेखा करते हुए, उस वृद्धा को बहुत भला-बुरा बोलते हैं। कोई घृणा से थूककर बेहया कह रहा था, कोई उसकी नीयत को दोष दे रहा था, कोई रोटी के टुकड़े पर जान देने वाली कहता, कोई कहता इसके लिए रिश्तों का कोई मतलब नहीं है, परचून वाला कहता, यह धर्म ईमान बिगाड़कर अंधेर मचा रही है, इसका खरबूज़े बेचना सामाजिक अपराध है। इन दिनों कोई भी उसका सामान छूना नहीं चाहता था।

13. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर:- पास-पड़ोस की दुकानों में पूछने पर लेखक को पता चला की। उसका २३ साल का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर जमीन में कछियारी करके निर्वाह करता था। खरबूजों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती। परसों मुँह-अंधेरे खेत में से बेलों से तरबूजे चुन रहा था कि गीली मेड़ की तरावट में आराम करते साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उस लड़के को डस लिया। ओझा के झाड़-फूँक आदि का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

14. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

उत्तर:- प्रस्तुत कहानी समाज में फैले अंधविश्वासों और अमीर-गरीबी के भेदभाव को उजागर करती है। यह कहानी अमीरों के अमानवीय व्यवहार और गरीबों की विवशता को दर्शाती है। मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्राय: पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास पारिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

15. इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर:- समाज में रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति को नियमों, कानूनों व परंपराओं का पालन करना पड़ता है। दैनिक आवश्यकताओं से अधिक महत्व जीवन मूल्यों को दिया जाता है।यह वाक्य गरीबों पर एक बड़ा

व्यंग्य है। गरीबों को अपनी भूख के लिए पैसा कमाने रोज़ ही जाना पड़ता है चाहे घर में मृत्यु ही क्यों न हो गई हो। परन्तु कहने वाले उनसे सहानुभूति न रखकर यह कहते हैं कि रोटी ही इनका ईमान है, रिश्ते-नाते इनके लिए कुछ भी नहीं है।

16. शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दु:खी होने का भी एक अधिकार होता है।

उत्तर:- यह व्यंग्य अमीरी पर है क्योंकि समाज में अमीर लोगों के पास दुख मनाने का समय और सुविधा दोनों होती हैं। इसके लिए वह दु:ख मनाने का दिखावा भी कर पाता है और उसे अपना अधिकार समझता है। शोक करने, गम मनाने के लिए सहूलियत चाहिए। दु:ख में मातम सभी मनाना चाहते हैं चाहे वह अमीर हो या गरीब। परंतु गरीब विवश होता है। वह रोज़ी रोटी कमाने की उलझन में ही लगा रहता है। उसके पास दु:ख मनाने का न तो समय होता है और न ही सुविधा होती है। इस प्रकार गरीबों को रोटी की चिंता उसे दु:ख मनाने के अधिकार से भी वंचित कर देती है।

पद्य-भाग

पाठ-9

(अब कैसे छूटेराम नाम)

***-संत रैदास का परिचय:-**

- रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन् 1388 (इनका जन्म कुछ विद्वान 1398 में हुआ भी बताते हैं) को बनारस में एक चर्मकार के घर हुआ था| रैदास कबीर के समकालीन हैं। रैदास की ख्याति से प्रभावित होकर सिकंदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था।

þ-wava4R

1 अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

इस पद में कवि ने उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है। एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो वह फिर कभी नहीं छूटता। कवि का कहना है कि यदि भगवान चंदन हैं तो भक्त पानी है। जैसे चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है वैसे ही प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। यदि भगवान बादल हैं तो भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। यदि भगवान चाँद हैं तो भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो अपलक चाँद को निहारता रहता है। यदि भगवान दीपक हैं तो भक्त उसकी बाती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। यदि भगवान मोती हैं तो भक्त धागे के समान है

जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।

2- ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै।

नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। भगवान गरीबों का उद्धार करने वाले हैं उनके माथे पर छत्र शोभा दे रहा है। भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। भगवान के छूने से अछूत मनुष्य का भी कल्याण हो जाता है। भगवान अपने प्रताप से किसी नीच को भी ऊँचा बना सकते हैं। जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे।

***-प्रश्न-उत्तर:-**

1: पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर: बादल-मोर, चाँद-चकोर, मोती-धागा, दीपक-बाती और सोना-सुहागा

2: पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे: पानी, समानी, आदि। इस पद में अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर: मोरा-चकोरा, बाती-राती, धागा-सुहागा, दासा-रैदासा

3: पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए: उदाहरण: दीपक – बाती

उत्तर: चंदन-पानी, घन-बनमोरा, चंद-चकोरा, सोनहि-सुहागा

4: दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: दूसरे पद में भगवान को 'गरीब निवाजु' कहा गया है क्योंकि भगवान गरीबों का उद्धार करते हैं।

5: दूसरे पद की 'जाकी छोती जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ़रै" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जिसकी छूत पूरी दुनिया को लगती है उसपर भगवान ही द्रवित हो जाते हैं। अछूत से अभी भी बहुत से लोग बच कर चलते हैं और अपना धर्म भ्रष्ट हो जाने से डरते हैं। अछूत की स्थिति समाज में दयनीय है। ऐसे लोगों का उद्धार भगवान ही करते हैं।

6: रैदास ने अपने स्वामी को किन किन नामों से पुकारा है?

उत्तर: गुसईआ (गोसाई), गरीब निवाजु (गरीबों का उद्धार करने वाले)

7: निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए: मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, छोति, तुहीं, गुसईआ।

उत्तर: मोर, चाँद, बत्ती, ज्योति, जलना, रात, छाता, छूने, तुम्हीं, गोसाई|

8:कवि के रोम रोम में प्रभु की भक्ति की सुंगंध किस प्रकार समाई हुई है?
उ-जिस प्रकार पानी के कण कण में चन्दन की सुगंध समाई रहती है,उसी प्रकार कवि के रोम रोम में प्रभु की भक्ति समाई है|
9:कवि ईश्वर के बीच कैसे सम्बन्ध स्थापित करना चाहते है?
उ:कवि अपने और ईश्वर के बीच अनन्य सम्बन्ध स्थापित करना चाहते है|
10:रैदास के लाल,अर्थात प्रभु की विशेषता लिखिए|
उ:रैदास ने लाल,अर्थात प्रभु की विशेषताओ का बखान करते हुए कहा है कि मेरे लाल दीनदयाल,गरीब निवाजू और समदर्शी है|
11:रैदास ने ईश्वर को गरीब निवाजू क्यों कहा है?
उ:रैदास ने ईश्वर ओ गरीब निवाजू कहा है क्योकि वहदुखियों पर कृपा करके उनके दु:ख दूर करते है|
12:प्रभु ने किन-किन लोगों का उद्धार किया है?
उ:प्रभु ने नामदेव,कबीर, त्रिलोचन ,साधना और सैनु जैसे कई भक्तों का उद्धार किया है|

***-नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:**

1: जाकी अँग-अँग बास समानी।
उत्तर: भगवान उस चंदन के समान हैं जिसकी सुगंध अंग-अंग में समा जाए।

2: जैसे चितवन चंद चकोरा।
उत्तर: जैसे चकोर हमेशा चांद को देखता रहता है वैसे ही मैं भी तुम्हें देखते रहना चाहता हूँ।

3: जाकी जोति बरै दिन राती।
उत्तर: भगवान यदि एक दीपक हैं तो भक्त उस बाती की तरह है जो प्रकाश देने के लिए दिन रात जलती रहती है।

4: ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
उत्तर: भगवान इतने महान हैं कि वह कुछ भी कर सकते हैं। भगवान के बिना कोई भी व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता।
5: नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।
उत्तर: भगवान यदि चाहें तो निचली जाति में जन्म लेने वाले व्यक्ति को भी ऊँची श्रेणी दे सकते हैं।

पद्य-भाग
पाठ-10
(रहीम के दोहे रहीम)

***-रहीम का परिचय :-**

अब्दुल **रहीम** ख़ानख़ाना का जन्म 17 दिसम्बर, 1556 ई. (माघ, कृष्ण पक्ष, गुरुवार) को सम्राट अकबर के प्रसिद्ध अभिभावक बैरम ख़ाँ के यहाँ लाहौर में हुआ था. ... बाबर की सेना में भर्ती होकर **रहीम** के पिता बैरम ख़ाँ ने अपनी स्वामी-भक्ति और वीरता का **परिचय** दिया और बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ के विश्वासपात्र बन गए| जन्म से एक मुसलमान होते हुए भी हिंदू जीवन के अंतर्मन में बैठकर रहीम जी ने जिस माध्यम से अंकित किये थे, उनकी विशाल हृदयता का परिचय देती हैं। हिंदू देवी-देवताओं, पर्वों, धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं का जहाँ भी आपके द्वारा उल्लेख किया गया है, पूरी जानकारी एवं ईमानदारी के साथ किया गया है। आप जीवन भर हिंदू जीवन को भारतीय जीवन का यथार्थ मानते रहे। रहीम ने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को उदाहरण के लिए चुना है और लौकिक जीवन व्यवहार पक्ष को उसके द्वारा समझाने का प्रयत्न किया है, जो भारतीय सांस्कृति की वर झलक को पेश करता है।उनके काव्य में शृंगार, शांत तथा हास्य रस मिलते हैं। दोहा, सोरठा, बरवै, कवित्त और सवैया उनके प्रिय छंद हैं। रहीम दास जी की भाषा अत्यंत सरल है, आपके काव्य में भक्ति, नीति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है। आपने सोरठा एवं छंदों का प्रयोग करते हुए अपनी काव्य रचनाओं को किया है| आपने ब्रजभाषा में अपनी काव्य रचनाएं की है| आपके ब्रज का रूप अत्यंत व्यवहारिक, स्पष्ट एवं सरल है| आपने तदभव शब्दों का अधिक प्रयोग किया है। ब्रज भाषा के अतिरिक्त आपने कई अन्य भाषाओं का प्रयोग अपनी काव्य रचनाओं में किया है| अवधी के ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी रहीम जी ने अपनी रचनाओं में किया है, आपकी अधिकतर काव्य रचनाएं मुक्तक शैली में की गई हैं जोकि अत्यंत ही सरल एवं बोधगम्य

रहीम के दोहे-

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम के इन दोहों में रहीम जी ने हमें प्रेम की नाज़ुकता के बारे में बताया है। उनके अनुसार प्रेम का बंधन किसी नाज़ुक धागे की तरह होता है और इसे बहुत संभाल कर रखना चाहिए। हम बलपूर्वक किसी को प्रेम के बंधन में नहीं बाँध सकते। ज्यादा खिंचाव आने पर प्रेम रूपी धागा चटक कर टूट सकता है। प्रेम रूपी धागे यानि टूटे रिश्ते को फिर से जोड़ना बेहद मुश्किल होता है। अगर हम कोशिशें करके प्रेम के रिश्ते को फिर से जोड़ लें, तब भी लोगों के मन में कोई कसक तो बनी ही रह जाती है। दूसरे शब्दों में, अगर एक बार किसी के मन में आपके प्रति प्यार की भावना मर गई, तो वह आपको दोबारा पहले जैसा प्यार नहीं कर सकता। कुछ न कुछ कमी तो रह ही जाती है।

2-रहिमन निज मन की बिथा ,मन हीरा खो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम के इन दोहों में हमें रहीम जी ने बहुत ही काम की सीख दी है। जिसके बारे में हम सब जानते हैं। रहीम जी इन पंक्तियों में कहते हैं कि अपने मन का दुःख हमें स्वयं तक ही

रखना चाहिए। लोग ख़ुशी तो बाँट लेते हैं। परन्तु जब बात दुःख की आती है, तो वे आपका दुःख सुन तो अवश्य लेते हैं, लेकिन उसे बाँटते नहीं है। ना ही उसे कम करने का प्रयास करते हैं। बल्कि आपकी पीठ पीछे वे आपके दुःख का मज़ाक बनाकर हंसी उड़ाते हैं। इसीलिए हमें अपना दुःख कभी किसी को नहीं बताना चाहिए।

3-एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय॥

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हमें यह शिक्षा देते हैं कि एक बार में एक ही काम करने चाहिए। हमें एक साथ कई सारे काम नहीं करने चाहिए। ऐसे में हमारे सारे काम अधूरे रह जाते हैं और कोई काम पूरा नहीं होता। एक काम के पूरा होने से कई सारे काम ख़ुद ही पूरे हो जाते हैं। जिस तरह, किसी पौधे को फल-फूल देने लायक बनाने हेतु, हमें उसकी जड़ में पानी डालना पड़ता है। हम उसके तने या पत्तों पर पानी डालकर फल प्राप्त नहीं कर सकते। ठीक इसी प्रकार, हमें एक ही प्रभु की श्रृद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए। अगर हम अपनी आस्था-रूपी जल को अलग-अलग जगह व्यर्थ बहाएंगे, तो हमें कभी भी मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।

4-चित्रकूट में रमिरहे,रहिमन अवध- नरेस।
जा पर बिपदा पड़तहै,सो आवत यह देस

रहीम के दोहे भावार्थ : इन पंक्तियों में रहीम जी ने राम के वनवास के बारे में बताया है। जब उन्हें 14 वर्षों का वनवास मिला था, तो वे चित्रकूट जैसे घने जंगल में रहने के लिए बाध्य हुए थे। रहीम जी के अनुसार, इतने घने जंगल में वही रह सकता है, जो किसी विपदा में हो। नहीं तो, ऐसी परिस्थिति में कोई भी अपने मर्ज़ी से रहने नहीं आएगा।

5-दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं|
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं ||

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने हमें एक दोहे की महत्ता के बारे में बताया है। दोहे के चंद शब्दों में ही ढेर सारा ज्ञान भरा होता है, जो हमें जीवन की बहुत सारी महत्वपूर्ण सीख दे जाते हैं। जिस तरह, कोई नट कुंडली मारकर खुद को छोटा कर लेता है और उसके बाद ऊंचाई तक छलांग लगा लेता है। उसी तरह, एक दोहा भी कुछ ही शब्दों में हमें ढेर सारा ज्ञान दे जाता है।

6-धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय|
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय||

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर दास जी कहते हैं कि वह कीचड़ का थोड़ा-सा पानी भी धन्य है, जो कीचड़ में होने के बावजूद भी ना जाने कितने कीड़े-मकौड़ों की प्यास बुझा देता है। वहीँ दूसरी ओर, सागर का अपार जल जो किसी की भी प्यास नहीं बुझा सकता, कवि को किसी काम का नहीं लगता। यहाँ कवि ने एक ऐसे गरीब के बारे में कहा है, जिसके पास धन नहीं होने के बावजूद भी वह दूसरों की मदद करता है। साथ ही एक ऐसे अमीर के बारे में बताया है, जिसके पास ढेर सारा धन होने पर भी वह दूसरों की मदद नहीं करता।

7-नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत|
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत||

रहीम के दोहे भावार्थ : यहाँ पर कवि ने स्वार्थी मनुष्य के बारे में बताया है और उसे पशु से भी बदतर कहा है। हिरण एक पशु होने पर भी मधुर ध्वनि से मुग्ध होकर शिकारी पर अपना सब कुछ न्योछावर कर देता है। जैसे कोई मनुष्य कला से प्रसन्न हो जाए, तो फिर वह धन के बारे में नहीं सोचता, अपितु वह अपना सारा धन कला पर न्योछावर कर देता है। परन्तु कुछ मनुष्य पशु से भी बदतर होते हैं, वे कला का लुत्फ़ तो उठा लेते हैं, परन्तु बदले में कुछ नहीं देते।

8-बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय|
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय||

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम जी ने हमें जीवन से संबंधित कई शिक्षाएँ दी हैं और उन्ही में से एक शिक्षा यह है कि हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि कोई बात बिगड़े नहीं। जिस प्रकार, अगर एक बार दूध फट जाए, तो फिर लाख कोशिशों के बावजूद भी हम उसे मथ कर माखन नहीं बना सकते। ठीक उसी प्रकार, अगर एक बार कोई बात बिगड़ जाए, तो हम उसे पहले जैसी ठीक कभी नहीं कर सकते हैं। इसलिए बात बिगड़ने से पहले ही हमें उसे संभाल लेना चाहिए।

9-रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि|
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि|

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम जी ने हमें इस दोहे में जो ज्ञान दिया है, उसे हमें हमेशा याद रखना चाहिए। ये पूरी जिंदगी हमारे काम आएगा। रहीम जी के अनुसार, हर वस्तु या व्यक्ति का अपना महत्व होता है, फिर चाहे वह छोटा हो या बड़ा। हमें कभी भी किसी बड़े व्यक्ति या वस्तु के लिए छोटी वस्तु या व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। कवि कहते हैं कि जहाँ सुई का काम होता है, वहां पर तलवार कोई काम नहीं कर पाती, अर्थात तलवार के आकार में बड़े होने पर भी वह काम की साबित नहीं होती, जबकि सुई आकार में अपेक्षाकृत बहुत छोटी होकर भी कारगर साबित होती है। इसीलिए हमें कभी धन-संपत्ति, ऊँच-नीच व आकार के आधार पर किसी चीज़ की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

10-रहिमन निज संपति बिना, कौ न बिपति सहाय|
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय||

रहीम के दोहे भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हमसे कह रहे हैं कि जब मुश्किल समय आता है, तो हमारी खुद की सम्पत्ति ही हमारी सहायता करती है। अर्थात हमें खुद की सहायता खुद ही करनी होती है, दूसरा कोई हमें उस विपत्ति से नहीं निकाल सकता। जिस प्रकार पानी के बिना कमल के फूल को सूर्य के जैसा तेजस्वी भी नहीं बचा पाता और वह मुरझा जाता है। उसी प्रकार बिना संपत्ति के मनुष्य का जीवन-निर्वाह हो पाना असंभव है।

11-रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून| ।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून|| ॥

रहीम के दोहे भावार्थ : रहीम जी ने अपने दोहों में जीवन के लिए जल के महत्व का वर्णन किया है। उनके अनुसार हमेशा पानी को हमेशा बचाकर रखना चाहिए। यह बहुमूल्य होता है। इसके बिना कुछ भी संभव नहीं है। बिना पानी के हमें न मोती में चमक मिलेगी और न हम जीवित रह पाएंगे। यहाँ पर मनुष्य के संदर्भ में कवि ने मान-मर्यादा को पानी की तरह बताया है। जिस तरह पानी के बिना मोती की

चमक चली जाती है, ठीक उसी तरह, एक मनुष्य की मान-मर्यादा भ्रष्ट हो जाने पर उसकी प्रतिष्ठा रूपी चमक खत्म हो जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?
उत्तर:- प्रेम आपसी लगाव, निष्ठा, समपर्ण और विश्वास का नाम है। यदि एक बार भी किसी कारणवश इसमें दरार आती है तो प्रेम फिर पहले जैसा नहीं रह पाता है। जिस प्रकार धागा टूटने पर जब उसे जोड़ा जाए तो एक गाँठ पड़ ही जाती है। अत:प्रेम सम्बन्ध बड़ी ही कठिनाई से बनते हैं इसलिए इन्हें जतन से सँभालकर रखना चाहिए।

---

2. हमें अपना दुःख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?
उत्तर:- हमें अपना दुःख दूसरों पर नहीं प्रकट करना चाहिए क्योंकि इससे हम केवल दूसरों के उपहास के पात्र बनते हैं।
अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार हमारे प्रति उपहासपूर्ण और दुख को और बढ़ानेवाला हो जाता है।

---

3. रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?
उत्तर:- सागर पानी से लबालब भरा होने के बावजूद उसके जल को कोई पी नहीं पाता क्योंकि उसका स्वाद खारा होता है। इसके विपरीत पंक के जल को पीकर छोटे जीव-जंतु की प्यास बुझ जाती है। वे तृप्त हो जाते हैं इसलिए रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को उसकी उपयोगिता के करण धन्य कहा है।

---

4. एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?
उत्तर:- कवि रहीम के अनुसार एक ही ईश्वर पर अटूट विश्वास रखने से सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। जिस प्रकार जड़ को सींचने से हमें फल और फूलों की प्राप्ति हो जाती है उसी प्रकार एक ही ईश्वर को स्मरण करने से हमें सारे सुख प्राप्त हो जाते हैं।

---

5. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?
उत्तर:- यद्यपि सूर्य कमल का पोषण करता है परन्तु पानी नहीं होता तो कमल सूख जाता है क्योंकि कमल को पुष्पित होने के लिए जल की अधिक आवश्यकता होती है। अत: कमल की संपत्ति जल है उसके न रहने पर सूर्य भी उसकी सहायता नहीं कर सकता है।

---

6. अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?
उत्तर:- अवध नरेश को चित्रकूट अपने वनवास के दिनों में जाना पड़ा। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि संकट के समय सभी को ईश्वर की शरण में जाना पड़ता है।

---

7. 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?
उत्तर:- 'नट' कुंडली मारने की कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है।

*-निम्न पंक्तियों का आशय स्पष्ट करिये -

अ-मिलै गाँठ पारी जाय- का आशय स्पष्ट करिये |

मिलै गाँठ परि जाए का अर्थ है कि एक बार यदि सम्बन्ध बिगर जाए तो फिर कभी भी पहले जैसे मधुर नहीं बन पाते |

ब-दुःख बाँटने का क्या अर्थ है?

-दुःख बांटने का अर्थ है कि अपना दुःख एक दुसरे को बताना ,जिससे दुःख कम हो सके, सहानुभूति व्यक्त करना |

क-एकै साधे सब सधै- से कवि ने क्या प्रेरणा दी है?

-एकै साधै ,सब सधै -दोहे में कवि ने महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा दी |

ख-सब सधै सब जाये -का क्या आशय है?

सब साधे सब जाय का आशय है कि हमे मूल लक्ष्य को ध्यान में रख केर कम करना चाहिय|

हर का के पीछे एक साथ भागने से हमारा कोइ भी कम पूरा नही होगा| हमारे सरे कम बिगर जायगे|

ग-किस तरह के लोग चित्रकूट आते है?

जो लोग बहुत दुखी होते है ,व्ही लोग चित्रकूट आते है| कवि ने स्पष्ट किया है किअवध के रजा राम वनवास के समय चित्रकूट आय थे|

घ-रहीम के अनुसार विपत्ति में कौन हमारे सहायक होते है?

-रहीम के अनुसार विपत्ति के समय केवल हमारी अपनी धन -सम्पति ही सहायक होती है|

च-रहिमन पानी राखिये -का क्या अर्थ है?

-रहिमन पानी राखिय का अर्थ है कि मनुष्य को अपना मान सम्मान बने रखना चाहिय ,क्योंकि मान सम्मान ही मनुष्य के पास सबसे बड़ी सम्पत्ति है|

छ-प्रेमरूपी धागे की क्या विशेषता है?

प्रेमरूपी धागे की विशेषता है कि यह प्रेम का बंधन जब एक बार जुड़ जाता है तो जल्दी नही टूटता ,और यदि एक बार टूट जाय तो फिर लाख कोशिश करने पैर भी पहले जैसा नही बन पाता| अर्थात बंधन विशवास पैर ही टिका होता है

गद्य भाग

पाठ-3

(एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा)

लेखिका का परिचय -बछेंद्री पाल

- आज हम बात करेंगे भारत की ऐसी महिला के बारे में जिन्होंने पहली बार दुनिया के सर्वोच्च शिखर माउंट एवरेस्ट को फतेह कर एक नया इतिहास रच दिया| यह बात है एक महिला द्वारा एवरेस्ट विजय की, जिसने बुलंद हौसलों और साहस का परिचय देते हुए सर्वप्रथम माउन्ट एवरेस्ट की चोटी पर कदम रखे और समस्त भारतवासियों का सर गर्व से ऊँचा कर दिया| 30 मई सन 1984 का दिन संपूर्ण भारत एवं औरतों के लिए गौरव और सम्मान का दिन था जब बछेंद्री पाल ने एवरेस्ट पर फिर से तिरंगा लहराया। चलिये दोस्तों जानते हैं।

बछेंद्री पाल के जीवन के बारे में – जन्म – 24 मई 1954 (आयु 63) नकुरी उत्तरकाशी ,उत्तराखंड व्यवसाय – इस्पात कंपनी 'टाटा स्टील' में कार्यरत, जहाँ चुने हुए लोगो को रोमांचक अभियानों का प्रशिक्षण देती हैं।

पाठ का सार:- **उत्तराखंड के नकुरी गांव में जन्मी बछेंद्री पाल ने दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए एवरेस्ट शिखर तक पहुंचने में सफलता प्राप्त की। उन्हें बचपन से ही पर्वत बहुत आकर्षित करते थे जब वह पढ़ाई कर रही थी तब उनके मन में पर्वत राज हिमालय की सबसे ऊंची टी एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने की इच्छा जागृत हुई। अपने इस सपने को पूरा करने के उद्देश्य से उन्होंने**

नेहरू पर्वतारोहण संस्थान से प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। उन्होंने बड़ी मेहनत और लगन से पर्वतारोहण के प्लस और माइनस पॉइंट सीखें। एवरेस्ट यात्रा से पूर्व उन्होंने पर्वतारोहण संस्थान द्वारा आयोजित प्री एवरेस्ट ट्रेनिंग कैंप एक्सपीडिशन में भी भाग लिया।

सफलता की ओर कदम :-

30 मई सन 1984 को ऐतिहासिक दिन जिसका सपना बछेंद्री पाल ने बचपन से देखा था। अपने लक्ष्य को पाने के लिए कठिन परिश्रम से प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उन्होंने पर्वत विजय करके यह सिद्ध कर दिया कि महिला किसी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं है। उनमें साहस और धैर्य की कमी नहीं है यदि महिला ठान ले तो कठिन से कठिन लक्ष्य भी प्राप्त कर सकती है।

एवरेस्ट विजय अभियान में बछेंद्री पाल को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। यह साहसिक अभियान बहुत जोखिम भरा था इसमें कितना जोखिम था इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अंतिम चढ़ाई के दौरान उन्हें 6:30 घंटे तक लगातार चढ़ाई करनी पड़ी। इनकी कठिनाई तब और बढ़ गई जब इनकी एक साथी के पांव में चोट लग गई। उन की गति धीमी हो गई थी तब वह पूरी तेजी से आगे नहीं बढ़ सकती थी। फिर भी हर कठिनाई का साहस और धैर्य से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ती रही अंत में 30 मई सन 1984 को दोपहर 1 बजकर 07 मिनट पर वह एवरेस्ट शिखर पर थी। इन्होंने विश्व के सर्वोत्तम शिखर को जीतने वाली सर्व प्रथम पर्वतारोही भारतीय महिला बनने का अभूतपूर्व गौरव प्राप्त कर लिया था।

एवरेस्ट फतेह करने वाली पहली महिला बछेंद्री पाल जी एक विश्वविद्यालय में शिक्षिका थी। लेकिन एवरेस्ट की सफलता के बाद भारत की एक आयरन एंड स्टील कंपनी ने उन्हें खेल सहायक की नौकरी के लिए ऑफर दिया उन्होंने यह ऑफर यह सोचकर स्वीकार कर लिया कि यह कंपनी इन्हें और अधिक पर्वत शिखरों पर विजय पाने के प्रयास में सहायता, सुविधा तथा मोटिवेशन प्रदान करती रहेगी। इस समय बछेंद्री पाल जी टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन नामक संस्था में नई पीढ़ी के पर्वतारोहियों को प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही हैं।

शब्दार्थ :-

-अभियान-चढ़ाई
हिमपात-बर्फबारी
ग्लेशियर-बर्फ की नदी
आशाजनक-आशावान
-प्रवास-यात्रा
-आरोही-ऊपर चढाई
-नौसिखिया-नया सीखनेवाला
-पर्वतारोही-पहाड़ पर चढने वाले
-उपस्कर-आरोही का सामान
-दुर्गम-कठिन रास्ता
-अवसाद-उदासी
-अनियमित-नियम के बिना
-भौचक्का-हैरान
-हिम.विरद-दरारे,खाई
-अभियांत्रिकी-तकनिकी
-विशालकाय पुंज-बड़ा बर्फ का ढेर
-कर्मठता-काम के लिय निष्ठा
-शंकु-नोक

*-प्रश्न उत्तर:-

1-शिखर पर चढ़ने वालों को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? एवरेस्ट- मेरी शिखर यात्रा पाठ के आधार पर बताइए।

1-जो पर्वतारोही हिमालय पर्वत के शिखर पर चढ़ते हैं, उन्हें खराब मौसम और बर्फ के तूफ़ान का मुकाबला करना ही पड़ता है।

2-अंगदोरजी के पाँव ठंडे क्यों पड़ जाते थे? एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा पाठ के आधार पर बताइए।

2-अंगदोरजी कुशल पर्वतारोही था। वह बिना ऑक्सीजन के बर्फ़ पर चलने का अभ्यस्त था। इसलिए वह यात्रा में ऑक्सीजन नहीं लगाता था। पंरतु बिना ऑक्सीजन के उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे।

3-एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा पाठ के सन्दर्भ में बताइए एवरेस्ट अभियान दल कब रवाना हुआ?

3-एवरेस्ट अभियान दल दिल्ली से काठमांडू के लिए 7 मार्च को हवाई जहाज से रवाना हुआ।

4 एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा पाठ के आधार पर बताइए बछेन्द्री पाल ने एवरेस्ट की तरफ क्या देखा?\

4-बछेंद्री पाल ने एवरेस्ट की तरफ एक भारी बर्फ का का बड़ा फूल (प्लूम) देखा।

5-एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा' पाठ के आधार पर बताइए जय लेखिका को देखकर हक्का-बक्का क्यों रह गया?

5-जय बछेन्द्री पाल का पर्वतारोही साथी था। उसे भी बछेन्द्री के साथ पर्वत-शिखर पर जाना था। शिखर कैम्प पर पहुँचने में उसे देर हो गई थी। वह सामान ढोने के कारण पीछे रह गया था। अतः बछेन्द्री उसके लिए चाय-जूस आदि लेकर उसे लेने के लिए पहुँची। जय ने यह कल्पना नहीं की थी कि बछेन्द्री उसकी चिन्ता करेगी। इसलिए जब उसने बछेन्द्री पाल को उसके लिए चाय-जूस के साथ देखा तो वह हक्का-बक्का रह गया।

6-एवरेस्ट शिखर पर पहुँचकर बछेन्द्री पाल ने स्वयं को किस प्रकार सुरक्षित रूप से स्थिर किया?

6-एवरेस्ट शिखर सँकरा व नुकीला था। अतः वहाँ पहूँचकर स्वयं को सुरक्षित रूप से स्थिर करने के लिए बछेन्द्री पाल ने बर्फ के फावड़े से खुदाई की और उसके उपरान्त घुटनों के बल बैठकर 'सागरमाथे' के शिखर का चुंबन किया।

7-एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा पाठ के आधार पर बताइए मई की रात को कैंप तीन में क्या घटना घटी और एक अन्य साथी ने लेखिका की जान कैसे बचाई?

7-15-16 मई, 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन जब लेखिका ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर नाइलॉन के बने तंबू के कैंप तीन में गहरी नींद में सोई हुई थी तभी रात में लगभग 12:30 बजे उसके सिर के पिछले हिस्से में एक ज़ोरदार धमाके के साथ कोई सख्त चीज टकराई। वह बर्फ का बड़ा विशालकाय पंज था। जिसने कैंप को तहस-नहस करने के साथ सभी व्यक्तियों को चोटिल किया। लेखिका तो बर्फ के नीचे फंस गयी थी।

तभी लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से उनके तंबू का रास्ता साफ करने में सफल हो गया तथा

उसने ही लेखिका के चारों तरफ के कड़े जमे बर्फ की खुदाई कर लेखिका को बर्फ की कब्र से बाहर खींच कर निकाला। इस तरह लेखिका की जान बची।

8-एवरेस्ट की शिखर यात्रा में किन-किन लोगों ने लेखिका बछेन्द्री पाल को सहयोग दिया?

8-एवरेस्ट की शिखर यात्रा में अभियान दल के नेता कर्नल खुल्लर, उपनेता प्रेमचंद, साथी अंगदोरजी तथा डॉक्टर मीनू मेहता ने लेखिका को सफलता प्राप्त करने में उल्लेखनीय सहयोग दिया। कर्नल खुल्लर ने लेखिका को शिखर यात्रा के प्रारंभ से लेकर अंत तक हिम्मत बँधायी, उसका साहस बढ़ाया। उन्होंने अभियान दल के सभी सदस्यों की मृत्यु को सहजता से स्वीकार करने का पाठ पढ़ाकर उन्हें मृत्यु के भय से मुक्त किया। उपनेता प्रेमचंद ने पहली बाधा खंभु हिमपात की स्थिति से उन्हें अवगत कराया और सचेत किया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है तथा बर्फ का गिरना जारी है। अतः सभी लोगों को सावधान रहना चाहिए। डॉक्टर मीनू मेहता ने एल्युमीनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुल बनाने, लट्ठों एवं रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना आदि सिखाया। अंगदोरजी ने लेखिका को लक्ष्य तक पहुँचने में सहयोग दिया तथा प्रोत्साहित भी किया|

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था?
उत्तर:- अग्रिम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहे थे।

---

2. लेखिका को सागरमाथा नाम क्यों अच्छा लगा?
उत्तर:- एवरेस्ट को नेपाली भाषा में सागरमाथा नाम से जाना जाता है। लेखिका को सागरमाथा नाम अच्छा लगा क्योंकि सागर के पैर नदियाँ हैं तो सबसे ऊँची चोटी उसका माथा है और यह एक फूल की तरह दिखाई देता है, जैसे माथा हो।

---

3. लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगा?
उत्तर:- लेखिका को एक बड़े भारी बर्फ़ का बड़ा फूल (प्लूम) पर्वत शिखर पर लहराता हुआ ध्वज जैसा लगा।

---

4. हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने घायल हुए?
उत्तर:- हिमस्खलन से एक की मृत्यु हुई और चार घायल हो गए।

---

5. मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?
उत्तर:- एक शेरपा कुली की मृत्यु तथा चार के घायल होने के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरे पर छाए अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु को भी सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

---

6. रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?
उत्तर:- प्रतिकूल जलवायु के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई है।

---

7. कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?
उत्तर:- कैंप-चार २९ अप्रैल को सात हजार नौ सौ मीटर की ऊँचाई पर लगाया गया था।

---

8. लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया?
उत्तर:- लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय यह कह कर दिया कि वह बिल्कुल ही नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

---

9. लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दी?
उत्तर:- लेखिका की सफलता पर बधाई देते हुए कर्नल खुल्लर ने कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में जाओगी जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।"

10. नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा?
उत्तर:- नजदीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को इतना अच्छा लगा कि वह भौंचक्की रही गई। वह एवरेस्ट ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी बर्फ़ीली ढेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

---

11. डॉ.मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?
उत्तर:- डॉ.मीनू मेहता ने उन्हें निम्न जानकारियाँ दीं –
• अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना।
• लट्ठों और रस्सियों का उपयोग करना।
• बर्फ़ की आड़ी -तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना।
• अग्रिम दल के आभियांत्रिक कार्यों की जानकारी दी।

---

12. तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में क्या कहा?
उत्तर:- तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में कहा कि वह एक पर्वतीय लड़की है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। कठिन और रोमांचक कार्य करना उनका शौक था। वे लेखिका की सफलता चाहते थे और उन्हें पूरी आशा थी कि वे होंगी।

---

13. लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी?
उत्तर:- लेखिका को अपने दल के साथ तथा जय और मीनू के साथ चढ़ाई करनी थी। परन्तु वे लोग पीछे रह गए थे।

---

14. लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ किया?
उत्तर:- तंबू के रास्ते एक बड़ा बर्फ़ पिंड गिरा था जिसने कैंप को तहस-नहस कर दिया था। लोपसांग ने अपनी स्विस छुरी की सहायता से तंबू का रास्ता साफ़ किया और लेखिका को बाहर निकाला।

---

15. साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की?
उत्तर:- साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिण्डर इकट्ठे किए। अपने दल के दूसरे सदस्यों को मदद करने के लिए एक थर्मस में जूस और दूसरे में चाय भरने के लिए नीचे उतर गई।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –
16. उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया?
उत्तर:- उपनेता प्रेमचंद ने अभियान दल के सदस्यों को निम्न स्थितियों से अवगत कराया –
• पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने यह भी बताया कि उनके दल ने कैंप – एक (6000 मीटर), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया।

व्याकरण :-

विराम चिन्हों के प्रकार (Types of Punctuation in Hindi)

- पूर्ण **विराम** (Full stop) (।)
- अर्द्ध-**विराम** (Semi-Colon) (;)
- अल्प-**विराम**(Comma) (,)
- प्रश्नवाचक **चिन्ह**(Sign of Interrogation) (?)
- योजक **चिन्ह** (Hyphen) (–)
- उद्धरण **चिन्ह**(Inverted Commas) (“_ “)
- रेखिका या निर्देशक **चिन्ह**(Dash) (_)
- विवरण **चिन्ह**(Colon+Dash) (:-)

विरामचिह्न लगाओ:-

मेरा प्रिय मित्र श्रीनिवास बहुत ही सज्जन एवं सदाचारी है। वह कभी किसी की बुराई नहीं करता, और न ही कभी किसी की चुगली करता है। हम स्कूल में पहले बहुत ही सहमे–सहमे रहते थे। खाना भी हम अकेले ही खाते थे। लेकिन जब से मुझे श्रीनिवास मिला है तब से मैं अब अकेला नहीं रहता। हम दोनों मिलकर पढ़ते हैं, आते हैं, जाते हैं और खाना भी साथ मिलकर ही खाते हैं। श्रीनिवास का कहना है कि खाना सदैव मिलकर ही खाना चाहिए। इससे हमारे बीच प्यार तो बढ़ता ही है, साथ ही हमें कई प्रकार की सब्ज़ी या दाल खाने को मिल जाती है जिससे शरीर की पौष्टिकता और ऊर्जा भी बढ़ती है। उसकी यह सीख मुझे अत्यंत अच्छी लगी। तब से मैं उसके एवं अन्य मित्रों के साथ मिलकर ही खाना खाता हूँ। बड़ा आनंद आता है। प्रतिदिन तरह–तरह की सब्ज़ियाँ खाने को मिलती हैं। कभी कोई लड्डू लेकर आता है, तो लड्डू खाने को मिलता है, कभी कोई कुछ और अच्छी चीज़ लाता है, तो वह खाने को मिलती है। इस प्रकार साथ मिलकर काम करने के अनेक लाभ हैं। यह सीख मैं प्रत्येक मनुष्य को देना चाहता हूँ जिससे कभी कोई लड़े–झगड़े नहीं, और सभी मनुष्य प्रेम एवं शांति से रहें।

संचयन-भाग

पाठ-1

(गिल्लू)

***-लेखिका का परिचय:-**

प्रसिद्ध छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ईस्वी में होली के दिन फर्रुखाबाद (उ.प्र.) के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था | होली के दिन जन्म के कारण ही ये जीवित बच गयी अन्यथा दो सो वर्षो से इस परिवार में कोई कन्या जीवित नही रहने दी जाती थी | महादेवी वर्मा की आरम्भिक शिक्षा इंदौर में हुयी फिर इन्होने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में M.A. किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य नियुक्त हो गयी |महादेवी वर्मा का समस्त काव्य वेदनामय है पर यह वेदना लौकिक नही आध्यात्मिक जगत की वेदना है और यह पूर्णत: भारतीय परम्परा के अनुसार है |महादेवी का गद्ध्य भी कविता जितना ही सशक्त है |

***-कहानी का सार:-**

छायावादी कविता के मुख्य निपुणों में से एक महादेवी वर्मा भी है। आधुनिक मीरा के रूप में महादेवी जी को जाना जाता है, उन्हें ज्ञानपीठ और साहित्य अकादमी पुरस्कारों जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

लेखक के जीवन का एक रोचक बात यह थी कि उनको जानवरों से बहुत प्रेम था। पशु क्रूरता के खिलाफ एक मजबूत अधिवक्ता होने के नाते, अपने पालतू जानवरों पर कहानियों की एक विशाल पुस्तक लिखी जिसने अप्रत्याशित रूप से उनके जीवन में कदम रखा।

गिलु, महादेवी जी को उनके बगीचे में घायल पाया गया था। कौवा के ठोकर से गिलु माटी पर निश्चिछल था।वह उसे अपने बेडरूम में ले गई जो कि अगले दो साल तक अपने प्रवास में बनी रही।

कि अगले दो साल तक अपने प्रवास में बनी रही। वह महादेवी जी के साथ खेलता था, उनके हाथों से खाता था। उनको पढ़ाई के वक्त एक टक देखता था। जब एक कार दुर्घटना में महादेवी जी घायल हो तो गिलू ने काजू नहीं खाता था। जब वह अपने घर वापसी की तो उन्होंने देखा कि काजू के एक ढेर गिलु के स्विंग पर ढेर हो गया था। गिल्लू अब तक केवल एकमात्र पशु था, जिसने उसकी प्लेट से खाया है और ऐसा ही कुछ महादेवी को याद करते हैं।

दुर्भाग्यपूर्ण दिन, लेखक ने गिलू के पंजे को ठंडा होते हुए देखा। उसने हीटर पर स्विच करने की कोशिश की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिरकार गिलु चला गया।

***-शब्दार्थ:-**

1-सोनजुही-जूही का पीला फूल
2-लघु प्राण-छोटा जीव
3-छुआ-छुऔवन-चुपके से छूना
4-समादरित-विशेष सम्मान
5-अनादरित -अपमान,तिरस्कार
6-अवतीर्ण -प्रकट
7-काकद्व्य-दो कौए
8-निश्चेष्ट-बिना किसी हरकत के
9-आश्वस्त-निश्चिंत
10-वीस्मित-चकित
11-नीड़-घोंसला
12-पीताभ-पीले रंग का

***-प्रश्न उत्तर:-**

1: सोनजूही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?

1: सोनजूही में लगी पीली कली को देख लेखिका को गिल्लू की याद आ गई। गिल्लू एक गिलहरी थी जिसकी जान लेखिका ने बचाई थी। उसके बाद से गिल्लू का पूरा जीवन लेखिका के साथ ही बीता था।

2: पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?

2: हिंदू धर्म में ऐसी मान्यता है कि पितरपक्ष के समय हमारे पूर्वज कौवे के भेष में आते हैं। एक अन्य मान्यता है कि जब कौवा काँव काँव करता है तो इसका मतलब होता है कि घर में कोई मेहमान आने वाला है। इन कारणों से कौवे को सम्मान दिया जाता है। लेकिन दूसरी ओर, कौवे के काँव काँव करने को अशुभ भी माना जाता है। इसलिए कौवे को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी कहा गया है।

3: गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

3: गिलहरी के घायल बच्चे के घाव पर लगे खून को पहले रुई के फाहे से साफ किया गया। उसके बाद उसके घाव पर पेंसिलिन का मलहम लगाया गया। उसके बाद रुई के फाहे से उसे दूध पिलाने की कोशिश की गई जो असफल रही। लगभग ढ़ाई घंटे के उपचार के बाद गिलहरी के बच्चे के मुँह में पानी की कुछ बूँदें जा सकीं।

4: लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?

4: लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उनके पैरों के पास आता और फिर सर्र से परदे पर चढ़ जाता था। उसके बाद वह परदे से उतरकर लेखिका के पास आ जाता था। यह सिलसिला तब तक चलता रहता था जब तक लेखिका गिल्लू को पकड़ने के लिए दौड़ न लगा देती थीं।

5: **गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?**

5: गिल्लू अब युवावस्था में प्रवेश कर रहा था। उसे एक जीवन साथी की जरूरत थी। इसलिए गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता समझ में आई। इसके लिए लेखिका ने खिड़की की जाली का एक कोना अलग करके गिल्लू के लिए बाहर जाने का रास्ता बना दिया।

6: **गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?**

6: जब लेखिका बीमार पड़ीं तो गिल्लू उनके सिर के पास बैठा रहता था। वह अपने नन्हे पंजों से लेखिका के सिर और बाल को सहलाता रहता था। इस तरह से वह किसी परिचारिका की भूमिका निभा रहा था।

7: **गिल्लू कि किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?**

7: गिल्लू ने दिन भर कुछ नहीं खाया था। रात में वह बहुत तकलीफ में लग रहा था। उसके बावजूद वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के पास आ गया। गिल्लू ने अपने ठंडे पंजों से लेखिका कि अंगुली पकड़ ली और उनके हाथ से चिपक गया। इससे लेखिका को लगने लगा कि गिल्लू का अंत समय समीप ही था।

8: **'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया' – का आशय स्पष्ट कीजिए।**

8: सुबह की पहली किरण निकलते ही गिल्लू के प्राण पखेरू उड़ गये। इस पंक्ति में लेखिका ने पुनर्जन्म की मान्यता को स्वीकार किया है। लेखिका को लगता है कि गिल्लू अपने अगले जन्म में किसी अन्य प्राणी के रूप में जन्म लेगा।

9: **सोनजूही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?**

9: लेखिका को लगता है कि गिल्लू अपने अगले जन्म में सोनजूही के पीले फूल के रूप में आयेगा।

_----------

⁎-व्याकरण:-

⁎-वर्ण-विच्छेदन

• **मात्रा**–प्रत्येक स्वर के लिए मात्राएँ निश्चित हैं। मात्राएँ स्वरों के चिह्न हैं। स्वर वर्ण मात्रा के रूप में ही व्यंजन वर्ण से जुड़ते हैं।

जैसे–	स्वर	मात्रा	प्रयोग	शब्द
	अ	मात्रा नहीं	क + अ = क	कर
	आ	ा	क + आ = का	कार
	इ	ि	क् + इ = कि	किताब
	ई	ी	क् + ई = की	कीट
	उ	ु	क् + उ = कु	कुदाल
	ऊ	ू	क् + ऊ = कू	कूप
	ऋ	ृ	क् + ऋ = कृ	कृष्ण
	ए	े	क् + ए = के	केशव
	ऐ	ै	क् + ऐ = कै	कैलाश
	ओ	ो	क् + ओ = को	कोयल
	औ	ौ	क् + औ = कौ	कौआ

व्यंजन- क ख ग घ ङ.
च छ ज झ
ट ठ ड ढ ण
त थ ड ध न
प फ ब भ म
य र ल व श
ष स ह
क्ष त्र ज्ञ श्र

अनुस्वार- (बेंदू)यानि न या म की आवाज

मन्त्र-मंत्र तन्त्र-तंत्र यन्त्र-तंत्र सन्तोष-संतोष

सम्पत्ति- सम्मान -संमान

अनुनासिका -यानि चन्द्र बिंदु -

आख -आँख मा-माँ पाच-पाँच पहुच-पहुँच

नुक्ता- यह उर्दू शब्दों में लगता है|

फ़र्ज क़र्ज ख़्वाब फ़रिश्ता फ़रमाइश क़ीमत

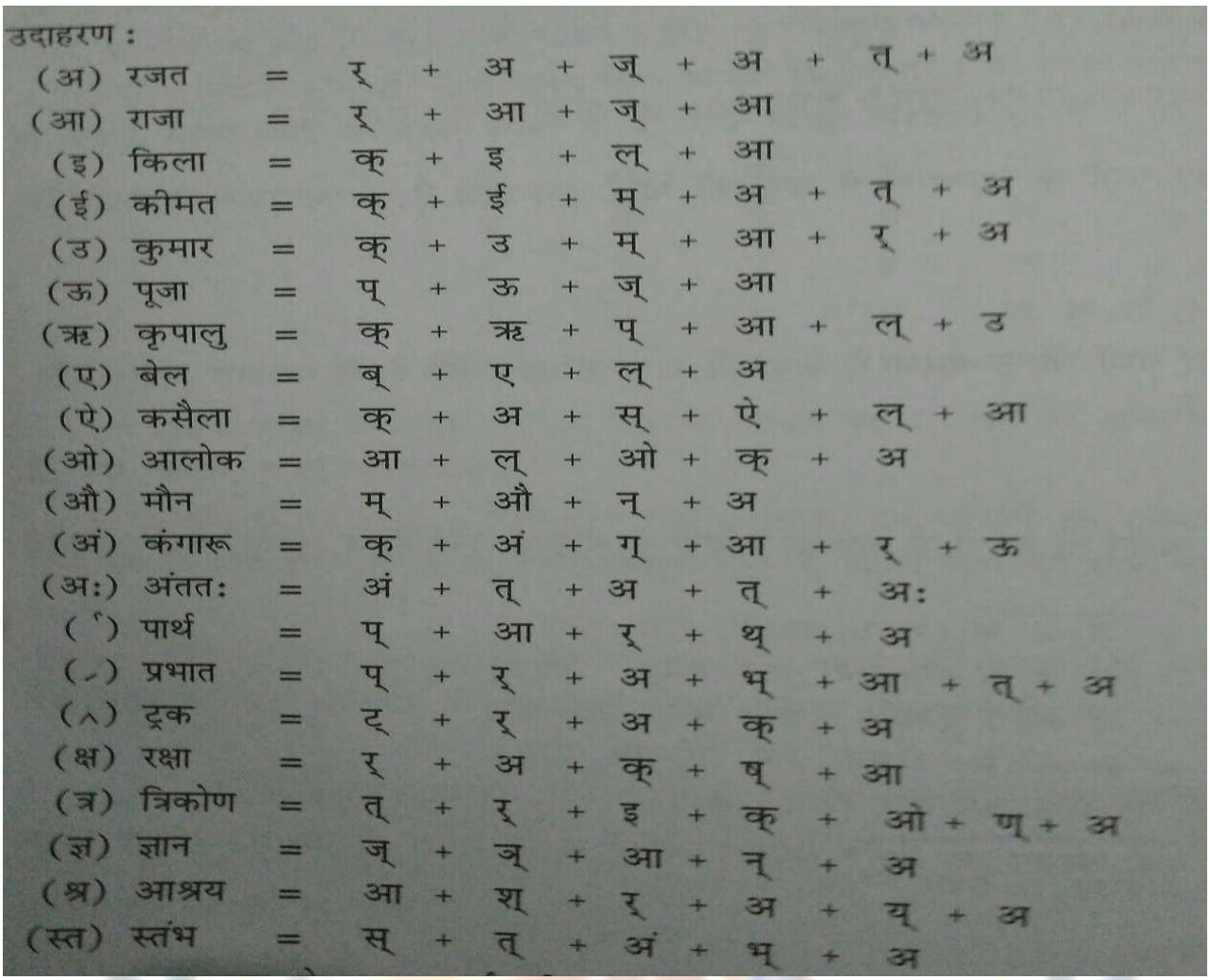

उदाहरण :

(अ) रजत	=	र् + अ + ज् + अ + त् + अ
(आ) राजा	=	र् + आ + ज् + आ
(इ) किला	=	क् + इ + ल् + आ
(ई) कीमत	=	क् + ई + म् + अ + त् + अ
(उ) कुमार	=	क् + उ + म् + आ + र् + अ
(ऊ) पूजा	=	प् + ऊ + ज् + आ
(ऋ) कृपालु	=	क् + ऋ + प् + आ + ल् + उ
(ए) बेल	=	ब् + ए + ल् + अ
(ऐ) कसैला	=	क् + अ + स् + ऐ + ल् + आ
(ओ) आलोक	=	आ + ल् + ओ + क् + अ
(औ) मौन	=	म् + औ + न् + अ
(अं) कंगारू	=	क् + अं + ग् + आ + र् + ऊ
(अः) अंततः	=	अं + त् + अ + त् + अः
(ॅ) पार्थ	=	प् + आ + र् + थ् + अ
(ॅ) प्रभात	=	प् + र् + अ + भ् + आ + त् + अ
(ॅ) ट्रक	=	ट् + र् + अ + क् + अ
(क्ष) रक्षा	=	र् + अ + क् + ष् + आ
(त्र) त्रिकोण	=	त् + र् + इ + क् + ओ + ण् + अ
(ज्ञ) ज्ञान	=	ज् + ञ् + आ + न् + अ
(श्र) आश्रय	=	आ + श् + र् + अ + य् + अ
(स्त) स्तंभ	=	स् + त् + अं + भ् + अ

बंदर	–	ब् + अं + द् + अ + र् + अ
बाज़ार	–	ब् + आ + ज़् + आ + र् + अ
श्रवण	–	श् + र् + अ + व् + अ + ण् + अ
चिह्न	–	च् + इ + ह् + न् + अ
ज़रूर	–	ज़् + अ + र् + ऊ + र् + अ
विकसित	–	व् + इ + क् + अ + स् + इ + त् + अ
समक्ष	–	स् + अ + म् + अ + क् + ष् + अ
श्रमिक	–	श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ
स्त्री	–	स् + त् + र् + ई
विज्ञान	–	व् + इ + ज़् + ञ् + आ + न् + अ
विद्वान	–	व् + इ + द् + व् + आ + न् + अ

पद्य-भाग

पाठ-12

(एक फूल की चाह)

***-कवि का परिचय:-** सियारामशरण गुप्त (४ सितम्बर १८९५ - २९ मार्च १९६३) (भाद्र पूर्णिमा सम्वत् १९५२ विक्रमी(हिन्दी के साहित्यकार थे। वह प्रसिद्ध हिन्दी कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे।सियारामशरण गुप्त का जन्म सेठ रामचरण कनकने के परिवार में चिरगाँव, झांसी में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने घर में ही गुजराती, अंग्रेजी और उर्दू भाषा सीखी। सन् 1929 ई . मेः राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और कस्तूरबा गाँधी के सम्पर्क में आये। कुछ समय वर्धा आश्रम में भी रहे। सन् 1940 में चिरगांव में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का स्वागत किया। वे सन्त विनोबा भावे के सम्पर्क में भी आये। उनकी पत्नी तथा पुत्रों का निधन असमय ही हो गया था अतः वे दुख वेदना और करुणा के : ।कवि बन गये1914 में उन्होंने अपनी पहली रचना *मौर्य विजय* लिखी। सन् १९१० में इनकी प्रथम कविता 'इन्दु' प्रकाशित हुई।[

Paa# ka wav :-

प्रस्तुत पाठ एक फूल की चाह' छुआछूत की समस्या से संबंधित कविता है। महामारी के दौरान एक अछूत बालिका उसकी चपेट में आ जाती है। वह अपने जीवन की अंतिम साँसे ले रही है। वह अपने माता- पिता से कहती है कि वे उसे देवी के प्रसाद का एक फूल लाकर दें । पिता असमंजस में है कि वह मंदिर में कैसे जाए। मंदिर के पुजारी उसे अछूत समझते हैं और मंदिर में प्रवेश के योग्य नहीं समझते। फिर भी बच्ची का पिता अपनी बच्ची की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए मंदिर में जाता है। वह दीप और पुष्प अर्पित करता है और फूल लेकर लौटने लगता है। बच्ची के पास जाने की जल्दी में वह पुजारी से प्रसाद लेना भूल जाता है। इससे लोग उसे पहचान जाते हैं। वे उस पर आरोप लगाते हैं कि उसने वर्षों से बनाई हुई मंदिर की पवित्रता नष्ट कर दी। वह कहता है कि उनकी देवी की महिमा के सामने उनका कलुष कुछ भी नहीं है। परंतु मंदिर के पुजारी तथा अन्य लोग उसे थप्पड़-मुक्कों से पीट-पीटकर बाहर कर देते हैं। इसी मार-पीट में देवी का फूल भी उसके हाथों से छूट जाता है। भक्तजन उसे न्यायालय ले जाते हैं। न्यायालय उसे सात दिन की सज़ा सुनाता है। सात दिन के बाद वह बाहर आता है , तब उसे अपनी बेटी की ज़गह उसकी राख मिलती है।

इस प्रकार वह बेचारा अछूत होने के कारण अपनी मरणासन्न बेटी की अंतिम इच्छा पूरी नहीं कर पाता। इस मार्मिक प्रसंग को उठाकर कवि पाठकों को यह कहना चाहता है कि छुआछूत की कुप्रथा मानव-जाति पर कलंक है। यह मानवता के प्रति अपराध है।

*-शब्दार्थ:-

-उद्वेलित भाव-विहवल

-अश्रु राशियाँ-आंसुओं की धरा

-महामारी-बड़े स्टार पर फैलनेवाली बिमारी

-प्रचंड-तीव्र

-क्षीण-कमजोर

-मृतवात्सा-जिस मान की संतान मर गई हो

-रुदन-रोना

-नितांत-अलग

-कृश-क्न्जोर

-रव-शोर

-तनु-शारीर

-शिथिल-ढीला,कमजोर

-अवयव-अंग

-विह्वल-दुखी,बेचैन

-सुवर्णघन-सुनहरा बादल

-सरसिज-कमल

-स्वीकार जाल-सूर्य की किरणे

-अमोदित-आनंदित

-अविश्रांत-बिना रुके हुए

-ढीकला-धकेलना

-सिंह पौर-मंदिर का मुख्य द्वार

-शुचिता-पवित्रता

*-भावार्थ:

1-उद्वेलित कर अश्रु राशियाँ,
ह्रदय चिताएँ धधकाकर,
महा महामारी प्रचंड हो
फैल रही थी इधर उधर।
क्षीण कंठ मृतवत्साओं का
करुण रुदन दुर्दांत नितांत,
भरे हुए था निज कृश रव में
हाहाकार अपार अशांत।

एक फूल की चाह भावार्थ : कवि ने एक फूल की चाह कविता में उस वक्त फैली हुई महामारी के बारे में बताया है। इस महामारी की चपेट में ना जाने कितने मासूम बच्चे आ चुके थे। जिन माताओं ने अपने बच्चों को इस महामारी के कारण खोया था, उनके आँसू रुक ही नहीं रहे थे। रोते आवाज़ उनकी रोते-

थी चुकी पड़ कमजोर, पर उस कमजोर पड़ चुके करुणा से भरे स्वर में भी अपार अशांति सुनाई दे रही थी।

बहुत रोकता था सुखिया को,

2-'न जा खेलने को बाहर',

नहीं खेलना रुकता उसका

नहीं ठहरती वह पल भर।

मेरा हृदय काँप उठता था,

बाहर गई निहार उसे;

यही मनाता था कि बचा लूँ

किसी भाँति इस बार उसे।

एक फूल की चाह भावार्थ : प्रस्तुत पंक्ति में एक पिता द्वारा अपने पुत्री को इस महामारी से बचाने के लिए किये जा रहे प्रयासों का वर्णन है। पिता अपनी पुत्री को महामारी से बचाने के लिए, हर बार बाहर खेलने जाने से रोकता था। पर पिता के हर बार मना करने पर भी, पुत्री सुखिया बाहर खेलने चली जाती थी। जब भी पिता सुखिया को बाहर खेलते हुए देखता था, तो डर से उसका हृदय कांप उठता था। वह सोचता था कि किसी भी तरह वह इस बार अपनी पुत्री को इस महामारी से बचा ले।

3- भीतर जो डर रहा छिपाए,
हाय! वही बाहर आया।
एक दिवस सुखिया के तनु को
ताप तप्त मैंने पाया।
ज्वर में विह्वल हो बोली वह,
क्या जानूँ किस डर से डर,
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर।

एक फूल की चाह भावार्थ : इन पंक्तियों मर कवि बता रहे हैं कि आखिरकार पिता को जिस बात का डर था वही हुआ। सुखिया एक दिन बुखार से बुरी तरह तड़प रही थी। उसका शरीर आग की तरह जल रहा था। इस बुखार से विचलित होकर सुखिया बोल रही है कि वह किस बात से डरे और किस बात से नहीं, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा। बुखार से तड़पते हुए स्वर में वह अपने पिता से देवी माँ के प्रसाद का एक फूल उसे लाकर देने के लिए बोलती है।

4-**क्रमश: कंठ क्षीण हो आया,**
शिथिल हुए अवयव सारे,
बैठा था नव नव उपाय की
चिंता में मैं मनमारे।

जान सका न प्रभात सजग से
हुई अलस कब दोपहरी,
स्वर्ण घनों में कब रवि डूबा,
कब आई संध्या गहरी।

एक फूल की चाह भावार्थ : तेज बुखार के कारण सुखिया का गला सूख गया था। उसमें कुछ बोलने की शक्ति नहीं बची थी। उसके सारे अंग ढीले पड़ चुके थे। वहीं दूसरी ओर सुखिया के पिता ने तरह-तरह के उपाय करके देख लिए थे, लेकिन कोई भी काम नहीं आया था। इसी वजह से वह गहरी चिंता में मन मार के बैठा था। वह बेचैनी में हर पल यही सोच रहा था कि कहीं से भी ढूंढ के अपनी बेटी का इलाज ले आए। इसी चिंता में कब सुबह से दोपहर हुई, कब दोपहर ख़त्म हुई और निराशाजनक शाम आयी उसे पता ही नहीं चला।

5-सभी ओर दिखलाई दी बस,
अंधकार की ही छाया,
छोटी सी बच्ची को ग्रसने
कितना बड़ा तिमिर आया!
ऊपर विस्तृत महाकाश में
जलते-से अंगारों से,
झुलसी-सी जाती थी आँखें
जगमग जगते तारों से।

एक फूल की चाह भावार्थ : इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि ऐसे निराशाजनक माहौल में अंधकार भी मानो डसने चला आ रहा है। पिता को ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इतनी छोटी-सी बच्ची के लिए पूरा अंधकार ही दैत्य बनकर चला आया है। पिता इस बात से हताश हो चुका है कि वह अपनी बेटी को बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर पाया। इसी निराशा में संध्या के समय आकाश में जगमगाते तारे भी पिता को अंगारों की तरह लग रहे हैं। जिससे उनकी आंखे झुलस-सी गई हैं।

6-देख रहा था-जो सुस्थिर हो
नहीं बैठती थी क्षण-भर,
हाय! वही चुपचाप पड़ी थी
अटल शांति सी धारण कर।
सुनना वही चाहता था मैं
उसे स्वयं ही उकसाकर-
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर!

एक फूल की चाह भावार्थ : पिता को यह देखकर बहुत कष्ट हो रहा है कि उसकी बेटी जो एक पल के लिए भी कभी शांति से नहीं बैठती थी और हमेशा उछलकूद मचाती रहती थी, आज चुपचाप बिना किसी हरकत के लेटी हुई है। वो यहाँ से वहां शोर मचाकार मानो पूरे घर में जान फूंक देती थी, लेकिन अब उसके चुपचाप हो जाने से पूरे घर की ऊर्जा समाप्त हो गई है। पिता उसे बार-बार उकसा कर यही सुनना चाह रहा है कि उसे देवी माँ के प्रसाद का एक फूल चाहिए।

7-ऊँचे शैल शिखर के ऊपर
मंदिर था विस्तीर्ण विशाल;
स्वर्ण कलश सरसिज विहसित थे
पाकर समुदित रवि कर जाल।
दीप धूप से आमोदित था
मंदिर का आँगन सारा;
गूँज रही थी भीतर बाहर
मुखरित उत्सव की धारा।

पहाड़ की चोटी के ऊपर एक विशाल मंदिर था। उसके प्रांगन में सूर्य की किरणों को पाकर कमल के फूल स्वर्ण कलशों की तरह शोभायमान हो रहे थे। मंदिर का पूरा आँगन धूप और दीप से महक रहा था। मंदिर के अंदर और बाहर किसी उत्सव का सा माहौल था।

8-भक्त वृंद मृदु मधुर कंठ से
गाते थे सभक्ति मुद मय,
'पतित तारिणी पाप हारिणी,
माता तेरी जय जय जय।'
'पतित तारिणी, तेरी जय जय'
मेरे मुख से भी निकला,
बिना बढ़े ही मैं आगे को
जाने किस बल से ढ़िकला।

भक्तों के झुंड मधुर वाणी में एक सुर में देवी माँ की स्तुति कर रहे थे। सुखिया के पिता के मुँह से भी देवी माँ की स्तुति निकल गई। फिर उसे ऐसा लगा कि किसी अज्ञात शक्ति ने उसे मंदिर के अंदर धकेल दिया।

9-मेरे दीप फूल लेकर वे
अंबा को अर्पित करके
दिया पुजारी ने प्रसाद जब
आगे को अंजलि भरके,
भूल गया उसका लेना झट,
परम लाभ सा पाकर मैं।
सोचा, बेटी को माँ के ये,
पुण्य पुष्प दूँ जाकर मैं।

पुजारी ने उसके हाथों से दीप और फूल लिए और देवी की प्रतिमा को अर्पित कर दिया। फिर जब पुजारी ने उसे प्रसाद दिया तो एक पल को वह ठिठक सा गया। वह अपनी कल्पना में अपनी बेटी को देवी माँ का प्रसाद दे रहा था।

10-सिंह पौर तक भी आँगन से
नहीं पहुँचने मैं पाया,
सहसा यह सुन पड़ा कि – "कैसे
यह अछूत भीतर आया?
पकड़ो देखो भाग न जावे,
बना धूर्त यह है कैसा;
साफ स्वच्छ परिधान किए है,
भले मानुषों के जैसा।

अभी सुखिया का पिता मंदिर के द्वार तक भी नहीं पहूँच पाया था कि किसी ने पीछे से आवाज लगाई, "अरे यह अछूत मंदिर के भीतर कैसे आ गया? इस धूर्त को तो देखो, कैसे सवर्णों जैसे पोशाक पहने है। पकड़ो, कहीं भाग न जाए।"

11-पापी ने मंदिर में घुसकर
किया अनर्थ बड़ा भारी;
कलुषित कर दी है मंदिर की
चिरकालिक शुचिता सारी।"
ऐं, क्या मेरा कलुष बड़ा है
देवी की गरिमा से भी;
किसी बात में हूँ मैं आगे
माता की महिमा के भी?
एक फूल की चाह भावार्थ : फिर भीड़ से आवाज़ आयी कि इस पापी ने मंदिर में घुस कर बड़ा अनर्थ किया है। मंदिर की सालों-साल की गरिमा, पवित्रता को इसने नष्ट कर दिया। सब मिलकर चिल्लाने लग जाते हैं कि इस पापी ने मंदिर में घुस कर मंदिर को दूषित कर दिया। तब सुखिया का पिता यह सोचने पर विवश हो जाता है कि क्या मेरा अछूतपन देवी माँ की महिमा से भी बड़ा है? क्या मेरे इस अछूतपन में देवी माँ से भी ज्यादा शक्ति है, जिसने देवी माँ के रहते हुए भी इस पूरे मंदिर को अशुद्ध कर दिया?
12-माँ के भक्त हुए तुम कैसे,
करके यह विचार खोटा?
माँ के सम्मुख ही माँ का तुम
गौरव करते हो छोटा!
कुछ न सुना भक्तों ने, झट से
मुझे घेरकर पकड़ लिया;
मार मारकर मुक्के घूँसे
धम्म से नीचे गिरा दिया!
एक फूल की चाह भावार्थ : सुखिया के पिता ने भीड़ से कहा कि तुम माँ के कैसे भक्त हो, जो खुद माँ के गौरव को मेरी तुलना में छोटा कर दे रहे हो। अरे माँ के सामने तो छूत-अछूत सभी एक-समान हैं।

परन्तु, सुखिया के पिता की इन बातों को किसी ने नहीं सुना और भीड़ ने उसे पकड़ कर खूब मारा, फिर मारते हुए उसे जमीन पर गिरा दिया।

13-मेरे हाथों से प्रसाद भी
बिखर गया हा! सबका सब,
हाय! अभागी बेटी तुझ तक
कैसे पहुँच सके यह अब।
न्यायालय ले गए मुझे वे,
सात दिवस का दंड-विधान
मुझको हुआ; हुआ था मुझसे
देवी का महान अपमान!

एक फूल की चाह भावार्थ : भीड़ के इस तरह सुखिया के पिता को पकड़ के मारने के कारण, उसके हाथों से प्रसाद भी गिर गया। जिसमें देवी माँ के चरणों में चढ़ा हुआ फूल भी था। सुखिया के पिता मार खाते हुए, दर्द सहते हुए भी सिर्फ यही सोच रहे थे कि अब ये देवी माँ के प्रसाद का फूल उसकी बेटी सुखिया तक कैसे पहुँचेगा। भीड़ उसे पकड़ कर न्यायलय ले गयी। जहाँ पर उसे देवी माँ के अपमान जैसे भीषण अपराध के लिए सात दिन कारावास का दंड दिया गया।

14-मैंने स्वीकृत किया दंड वह
शीश झुकाकर चुप ही रह;
उस असीम अभियोग, दोष का
क्या उत्तर देता, क्या कह?
सात रोज ही रहा जेल में
या कि वहाँ सदियाँ बीतीं,
अविश्रांत बरसा करके भी
आँखें तनिक नहीं रीतीं।

एक फूल की चाह भावार्थ : सुखिया के पिता ने चुपचाप दंड को स्वीकार कर लिया। उसके पास कहने के लिए कुछ था ही नहीं। उसे पूरे सात दिन जेल में बिताने पड़े, जो उसे सात सदियों के बराबर प्रतीत हो रहे थे। पुत्री के वियोग में सदैव बहते आंसू भी रुक नहीं पा रहे थे। वह हर पल अपनी प्यारी पुत्री को याद करके रोता रहता था।

15-दंड भोगकर जब मैं छूटा,
पैर न उठते थे घर को;
पीछे ठेल रहा था कोई
भय-जर्जर तनु पंजर को।
पहले की-सी लेने मुझको
नहीं दौड़कर आई वह;
उलझी हुई खेल में ही हा!
अबकी दी न दिखाई वह।

एक फूल की चाह भावार्थ : जेल से छूट कर वह भय के कारण घर नहीं जा पा रहा था। ऐसा प्रतीत हो

रहा था कि उसके शरीर के अस्थि-पंजर को मानो कोई उसके घर की ओर धकेल रहा हो। जब वह घर पहुंचा, तो पहले की तरह उसकी बेटी दौड़ कर उसे लेने नहीं आयी और ना ही वह खेलती हुई बाहर कहीं दिखाई दी।

16-उसे देखने मरघट को ही
गया दौड़ता हुआ वहाँ,
मेरे परिचित बंधु प्रथम ही
फूँक चुके थे उसे जहाँ।
बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी,
हाय! फूल-सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढ़ेरी!

एक फूल की चाह भावार्थ : जब वह घर पर अपनी बेटी को नहीं देख पाता है, तो वह अपनी बेटी को देखने के लिए श्मशान की ओर दौड़ता है। परन्तु जब वह श्मशान पहुँचता है, तो उसके परिचित बंधु आदि संबंधी पहले ही उसकी पुत्री का अंतिम संस्कार कर चुके होते हैं। अब तो उसकी चिता भी बुझ चुकी थी। यह देख कर सुखिया के पिता की छाती धधक उठती है। उसकी फूलों की तरह कोमल-सी बच्ची आज राख का ढेर बन चुकी थी।

17-अंतिम बार गोद में बेटी,
तुझको ले न सका मैं हा!
एक फूल माँ का प्रसाद भी
तुझको दे न सका मैं हा!

एक फूल की चाह भावार्थ : अंत में सुखिया के पिता के मन में बस यही मलाल शेष बचता है कि वह अपनी पुत्री को अंतिम बार गोद में भी नहीं ले पाया। वह इतना अभागा है कि अपनी बेटी की अंतिम इच्छा के रूप में, माँ के प्रसाद का एक फूल भी उसे लाकर नहीं दे पाया।

*-निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट करते हुए उनका अर्थ सौंदर्य बताइए:

1-अविश्रांत बरसा करके भी आँखें तनिक नहीं रीतीं|

उत्तर: उसकी आँखें निरंतर बरसने के बावजूद अभी भी सूखी थीं। यह पंक्ति शोक की चरम सीमा को दर्शाती है। कहा जाता है कि कोई कभी कभी इतना रो लेता है कि उसकी अश्रुधारा तक सूख जाती है।

2-बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर छाती धधक उठी मेरी

उत्तर: उधर चिता बुझ चुकी थी, इधर सुखिया के पिता की छाती जल रही थी।

3-हाय! वही चुपचाप पड़ी थी अटल शांति सी धारण कर

उत्तर: जो बच्ची कभी भी एक जगह स्थिर नहीं बैठती थी, आज वही चुपचाप पत्थर की भाँति पड़ी हुई थी।

4-पापी ने मंदिर में घुसकर किया अनर्थ बड़ा भारी

उत्तर: सुखिया के पिता को मंदिर में देखकर एक सवर्ण कहता है कि इस पापी ने मंदिर में प्रवेश करके बहुत बड़ा अनर्थ कर दिया, मंदिर को अपवित्र कर दिया।

*-प्रश्न –उत्तर :-

1-पापी ने मंदिर में घुसकर किया अनर्थ बड़ा भारी। कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

1-इसमें ढोंगी भक्तों ने सुखिया के पिता पर मंदिर की पवित्रता नष्ट करने का भीषण आरोप लगाया है। सियारामशरण गुप्त वे कहते हैं-सुखिया का पिता पापी है। यह अछूत है। इसने मंदिर में घुसकर भीषण पाप किया है। इसके अंदर आने से मंदिर की पवित्रता नष्ट हो गई है।

2-एक फूल की चाह कविता से क्या प्रेरणा मिलती है?

2-इस कविता से यह प्रेरणा मिलती है कि सभी प्राणियों को एक समान मानना चाहिए। जन्म का आधार मानकर किसी को अछूत कहना निंदनीय अपराध है।

3-बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर छाती धधक उठी मेरी। कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

3-जब सुखिया का पिता जेल से छूटा तो वह श्मशान में गया। उसने देखा कि वहाँ उसकी बेटी की जगह राख की ढेरी पड़ी थी। उसकी बेटी की चिता ठंडी हो चुकी थी। पर एक पिता के सीने के आग धधक रही थी।

4-एक फूल की चाह कविता में न्यायालय द्वारा सुखिया के पिता को क्यों दंडित किया गया?

4-न्यायालय द्वारा सुखिया के पिता को इसलिए दंडित किया गया, क्योंकि वह अछूत होकर भी देवी के मंदिर में प्रवेश कर गया था। मंदिर को अपवित्र तथा देवी का अपमान करने के कारण सुखिया के पिता को न्यायालय ने सात दिन के कारावास का दंड देकर दंडित किया।

5-सुखिया के पिता किस सामाजिक बुराई के शिकार हुए? एक फूल की चाह कविता के आधार पर बताइए।

5- सुखिया का पिता उस वर्ग से संबंधित था, जिसे समाज के कुछ लोग अछूत कहते हैं, इस कारण वह छुआछूत जैसी सामाजिक बुराई का शिकार हो गया था। अछूत होने के कारण उसे मंदिर को अपवित्र करने और देवी का अपमान करने का आरोप लगाकर पीटा गया तथा उसे सात दिन की जेल मिली।

6-एक फूल की चाह कविता में माता के भक्तों ने सुखिया के पिता के साथ कैसा व्यवहार किया?

6-माता के भक्त जो माता के गुणगान में लीन थे, उनमें से एक की दृष्टि माता के प्रसाद का फूल लेकर जाते हुए सुखिया के पिता पर पड़ी। उसने आवाज़ दी कि "यह अछूत कैसे अंदर आ गया। इसको पकड़ लो।" फिर क्या था, माता के अन्य भक्तगण पूजा-वंदना छोड़कर उसके पास आए और कोई बात सुने बिना ज़मीन पर गिराकर मारने लगे।

7-पिता को सुखिया की अंतिम इच्छा पूरी करने में क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं? एक फूल की चाह कविता के आधार पर लिखिए।

7-पिता को सुखिया की अंतिम इच्छा पूरी करने में निम्नलिखित कठिनाइयाँ आईं :-

1. सुखिया के पिता को मंदिर के प्रसाद का एक फूल लाना था, अतः वह निराशा में डूब गया, क्योंकि वह सामाजिक स्थिति को जानता था।

2. मंदिर में जैसे ही उसने पुजारी से प्रसाद लिया तभी कुछ लोगों ने उसे पहचान लिया और उन्होंने उसे खूब मारा-पीटा। मंदिर में पुजारी से मिला प्रसाद नीचे बिखर गया।

3. न्यायालय से दण्ड दिया गया।

4. वह पुत्री को प्रसाद का फूल न दे सका और उसके घर पहुँचने से पहले ही वह स्वर्ग सिधार गई।

9-'एक फूल की चाह' कविता में देवी के उच्च जाति के भक्तगण जोर-ज़ोर से गला फाड़कर चिल्ला रहे थे, "पतित-तारिणी पाप-

9-हारिणी माता तेरी जय!जय-जय-" वे माता को भक्तों का उद्धार करने वाली, पापों को नष्ट करने वाली, पापियों का नाश करने वाली मानकर जयजयकार कर रहे थे। उसी बीच एक अछूत भक्त के मंदिर - में आ जाने से वे उस पर मंदिर की पवित्रता और देवी की गरिमा नष्ट होने का आरोप लगा रहे थे। जब देवी पापियों का नाश करने वाली हैं तो एक पापी या अछूत उनकी गरिमा कैसे कम कर रहा था। भक्तों की ऐसी सोच से उनकी दोहरी मानसिकता उजागर होती है

----

*-Vyakr`- svRam:-

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे:– मैं, हम, तू, तुम, वह, यह, आप, कौन, कोई, जो आदि।

सर्वनाम के छः भेद होते हैं:–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

1-**पुरुषवाचक सर्वनाम**:-जिन सर्वनाम शब्दों से व्यक्ति का बोध होता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है।

पुरुषवाचक सर्वनाम' पुरुषों (स्त्री या पुरुष) के नाम के बदले आते हैं।
जैसे- मैं आता हूँ। तुम जाते हो। वह भागता है।
उपर्युक्त वाक्यों में 'मैं, तुम, वह' पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

2-पुरुषवाचक सर्वनाम के प्रकार

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है-

(i)उत्तम पुरुषवाचक (ii)मध्यम पुरुषवाचक (iii)अन्य पुरुषवाचक

(i)उत्तम पुरुषवाचक(First Person):-जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक कहते है।

जैसे- मैं, हमारा, हम, मुझको, हमारी, मैंने, मेरा, मुझे आदि।

उदाहरण- मैं स्कूल जाऊँगा।
हम मतदान नहीं करेंगे।
यह कविता मैंने लिखी है।
बारिश में हमारी पुस्तकें भीग गई।
मैंने उसे धोखा नहीं दिया।

(ii) मध्यम पुरुषवाचक(Second Person) :-जिन सर्वनामों का प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक कहते है।

जैसे- तू, तुम, तुम्हे, आप, तुम्हारे, तुमने, आपने आदि।

उदाहरण- तुमने गृहकार्य नहीं किया है।
तुम सो जाओ।
तुम्हारे पिता जी क्या काम करते हैं ?
तू घर देर से क्यों पहुँचा ?
तुमसे कुछ काम है।

(iii)अन्य पुरुषवाचक (Third Person):-जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति के लिए किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुषवाचक कहते है।

जैसे- वे, यह, वह, इनका, इन्हें, उसे, उन्होंने, इनसे, उनसे आदि।

उदाहरण- वे मैच नही खेलेंगे।
उन्होंने कमर कस ली है।
वह कल विद्यालय नहीं आया था
उसे कुछ मत कहना।
उन्हें रोको मत, जाने दो।
इनसे कहिए, अपने घर जाएँ।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम:-

सर्वनाम के जिस रूप से हमे किसी बात या वस्तु का निश्चत रूप से बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

दूसरे शब्दों में- जिस सर्वनाम से वक्ता के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध होता है, उसे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं।

सरल शब्दों में- जो सर्वनाम निश्चयपूर्वक किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध कराएँ, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे- यह, वह, ये, वे आदि।

वाक्यों में इनका प्रयोग देखिए-
तनुज का छोटा भाई आया है। यह बहुत समझदार है।
किशोर बाजार गया था, वह लौट आया है।
उपर्युक्त वाक्यों में 'यह' और 'वह' किसी व्यक्ति का निश्चयपूर्वक बोध कराते हैं, अतः ये निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम:-

जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।
दूसरे शब्दों में- जो सर्वनाम किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर ऐसे संकेत करें कि उनकी स्थिति अनिश्चित या अस्पष्ट रहे, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।
जैसे- कोई, कुछ, किसी आदि।

वाक्यों में इनका प्रयोग देखिए-
मोहन! आज कोई तुमसे मिलने आया था।
पानी में कुछ गिर गया है।
यहाँ 'कोई' और 'कुछ' व्यक्ति और वस्तु का अनिश्चित बोध कराने वाले अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4)संबंधवाचक सर्वनाम :-जिन सर्वनाम शब्दों का दूसरे सर्वनाम शब्दों से संबंध ज्ञात हो तथा जो शब्द दो वाक्यों को जोड़ते है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते है।
दूसरे शब्दों में- जो सर्वनाम वाक्य में प्रयुक्त किसी अन्य सर्वनाम से सम्बंधित हों, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते है।
जैसे- जो, जिसकी, सो, जिसने, जैसा, वैसा आदि।

वाक्यों में इनका प्रयोग देखिए-
जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
जिसकी लाठी, उसकी भैंस।
उपर्युक्त वाक्यों में 'वैसा' का सम्बंध 'जैसा' के साथ तथा 'उसकी' का सम्बन्ध 'जिसकी' के साथ सदैव रहता है। अतः ये संबंधवाचक सर्वनाम है।

5)प्रश्नवाचक सर्वनाम :-जो सर्वनाम शब्द सवाल पूछने के लिए प्रयुक्त होते है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है।
सरल शब्दों में- प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहते है।
जैसे- कौन, क्या, किसने आदि।

वाक्यों में इनका प्रयोग देखिए-
टोकरी में क्या रखा है।
बाहर कौन खड़ा है।
तुम क्या खा रहे हो?
उपर्युक्त वाक्यों में 'क्या' और 'कौन' का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए हुआ है। अतः ये प्रश्नवाचक सर्वनाम है।

6) निजवाचक सर्वनाम :-'निज' का अर्थ होता है- अपना और 'वाचक' का अर्थ होता है- बोध (ज्ञान) कराने वाला अर्थात 'निजवाचक' का अर्थ हुआ- अपनेपन का बोध कराना।
इस प्रकार,
जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता के साथ अपनेपन का ज्ञान कराने के लिए किया जाए, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते है।
जैसे- अपने आप, निजी, खुद आदि।

'आप' शब्द का प्रयोग पुरुषवाचक तथा निजवाचक सर्वनाम-दोनों में होता है।

उदाहरण-

आप कल दफ्तर नहीं गए थे। (मध्यम पुरुष- आदरसूचक)
आप मेरे पिता श्री बसंत सिंह हैं। (अन्य पुरुष-आदरसूचक-परिचय देते समय)
ईश्वर भी उन्हीं का साथ देता है, जो अपनी मदद आप करता है। (निजवाचक सर्वनाम)

'निजवाचक सर्वनाम' का रूप 'आप' है। लेकिन पुरुषवाचक के अन्यपुरुषवाले 'आप' से इसका प्रयोग बिलकुल अलग है। यह कर्ता का बोधक है, पर स्वयं कर्ता का काम नहीं करता। पुरुषवाचक 'आप' बहुवचन में आदर के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे- आप मेरे सिर-आखों पर है; आप क्या राय देते है ? किन्तु, निजवाचक 'आप' एक ही तरह दोनों वचनों में आता है और तीनों पुरुषों में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग निम्नलिखित अर्थो में होता है-

(क) निजवाचक 'आप' का प्रयोग किसी संज्ञा या सर्वनाम के अवधारण (निश्चय) के लिए होता है। जैसे- मैं 'आप' वहीं से आया हूँ; मैं 'आप' वही कार्य कर रहा हूँ।

(ख) निजवाचक 'आप' का प्रयोग दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए भी होता है। जैसे- उन्होंने मुझे रहने को कहा और 'आप' चलते बने; वह औरों को नहीं, 'अपने' को सुधार रहा है।

(ग) सर्वसाधारण के अर्थ में भी 'आप' का प्रयोग होता है। जैसे- 'आप' भला तो जग भला; 'अपने' से बड़ों का आदर करना उचित है।

(घ) अवधारण के अर्थ में कभी-कभी 'आप' के साथ 'ही' जोड़ा जाता है। जैसे- मैं 'आप ही' चला आता था; यह काम 'आप ही'; मैं यह काम 'आप ही' कर लूँगा।

गद्य-भाग

पाठ-4

(तुम कब जाओगे ,अतिथि)

(शरद जोशी)

*-लेखक का परिचय:-हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म 21 मई 1931 को उज्जैन, मध्यप्रदेश में हुआ था। शरद जोशी ने मध्य प्रदेश सरकार के सूचना एवं प्रकाशन विभाग में काम किया लेकिन अपने लेखन के कारण इन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और लेखन को ही पूरी तरह से अपना लिया। आपने इन्दौर में रहते हुए समाचारपत्रों और रेडियो के लिए लेखन किया।

***-पाठ का सार:-**तुम्हारे आने के चौथे दिन, बार-बार यह प्रश्न मेरे मन में उमड़ रहा है, तुम कब जाओगे अतिथि! तुम कब घर से निकलोगे मेरे मेहमान!

तुम जिस सोफ़े पर टांगें पसारे बैठे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर लगा है, जिसकी फड़फड़ाती तारीख़ें मैं तुम्हें रोज़ दिखा कर बदल रहा हूं. यह मेहमांनवाज़ी का चौथा दिन है, मगर तुम्हारे जाने की कोई संभावना नज़र नहीं आती. लाखों मील लंबी यात्रा कर एस्ट्रॉनॉट्स भी चांद पर इतने नहीं रुके जितने तुम रुके. उन्होने भी चांद की इतनी मिट्टी नहीं खोदी जितनी तुम मेरी खोद चुके हो. क्या तुम्हें अपना घर याद नहीं आता? क्या तुम्हें तुम्हारी मिट्टी नहीं पुकारती?

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अंदर ही अंदर मेरा बटुआ कांप उठा था. फिर भी मैं मुस्कराता हुआ उठा और तुम्हारे गले मिला. मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया. तुम्हारी शान में ओ मेहमान, हमने दोपहर के भोजन को लंच में बदला और रात के खाने को डिनर में. हमने तुम्हारे लिए सलाद कटवाया, रायता बनवाया और मिठाइयां मंगवाईं. इस उम्मीद में कि दूसरे दिन शानदार मेहमांनवाज़ी की छाप लिए तुम रेल के डिब्बे में बैठ जाओगे. मगर, आज चौथा दिन है और तुम यहीं हो. कल रात हमने खिचड़ी बनाई, फिर भी तुम यहीं हो. आज हम उपवास करेंगे और तुम यहीं हो. तुम्हारी उपस्थिति यूं रबर की तरह खिंचेगी, हमने कभी सोचा न था सुबह तुम आए और बोले,''लॉन्ड्री को कपड़े देने हैं.'' मतलब? मतलब यह कि जब तक कपड़े धुल कर नहीं आएंगे, तुम नहीं जाओगे? यह चोट मार्मिक थी, यह आघात अप्रत्याशित था. मैंने पहली बार जाना कि अतिथि केवल देवता नहीं होता. वह मनुष्य और कई बार राक्षस भी हो सकता है. यह देख मेरी पत्नी की आंखें बड़ी-बड़ी हो गईं. तुम शायद नहीं जानते कि पत्नी की आंखें जब बड़ी-बड़ी होती हैं, मेरा दिल छोटा-छोटा होने लगता है.

कपड़े धुल कर आ गए और तुम यहीं हो. पलंग की चादर दो बार बदली जा चुकी और तुम यहीं हो. अब इस कमरे के आकाश में ठहाकों के रंगीन गुब्बारे नहीं उड़ते. शब्दों का लेन-देन मिट गया. अब करने को चर्चा नहीं रही. परिवार, बच्चे, नौकरी, राजनीति,

रिश्तेदारी, पुराने दोस्त, फ़िल्म, साहित्य. यहां तक कि आंख मार-मार कर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी ज़िक्र कर लिया. सारे विषय ख़त्म. तुम्हारे प्रति मेरी प्रेमभावना गाली में बदल रही है. मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि तुम कौन-सा फ़ेविकोल लगा कर मेरे घर में आए हो?

पत्नी पूछती है,''कब तक रहेंगे ये?'' जवाब में मैं कंधे उचका देता हूं. जब वह प्रश्न पूछती है, मैं उत्तर नहीं दे पाता. जब मैं पूछता हूं, वो चुप रह जाती है. तुम्हारा बिस्तर कब गोल होगा अतिथि?

मैं जानता हूं कि तुम्हें मेरे घर में अच्छा लग रहा है. सबको दूसरों के घर में अच्छा लगता है. यदि लोगों

का बस चलता तो वे किसी और के घर में रहते. किसी दूसरे की पत्नी से विवाह करते. मगर घर को सुंदर और होम को स्वीट होम इसीलिए कहा गया है कि मेहमान अपने घर वापिस लौट जाएं.
मेरी रातों को अपने खर्राटों से गुंजाने के बाद अब चले जाओ मेरे दोस्त! देखो, शराफ़त की भी एक सीमा होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है जो बोला जा सकता है.
कल का सूरज तुम्हारे आगमन का चौथा सूरज होगा. और वह मेरी सहनशीलता की अंतिम सुबह होगी. उसके बाद मैं लड़खड़ा जाऊंगा. यह सच है कि अतिथि होने के नाते तुम देवता हो, मगर मैं भी आख़िर मनुष्य हूं. एक मनुष्य ज़्यादा दिनों देवता के साथ नहीं रह सकता. देवता का काम है कि वह दर्शन दे और लौट जाए. तुम लौट जाओ अतिथि. इसके पूर्व कि मैं अपनी वाली पर उतरूं, तुम लौट जाओ.
उफ़! तुम कब जाओगे, अतिथि!

***-शब्दार्थ:-**

1-आगमन -आना
2-निस्संk0च -बिना संकोच के
3-सतत-लगातार
4-आतिथ्य-आवभगत,सत्कार
5-अन्तरंग-गहरा
6-आशंका-खतरा
7-मेहमाननवाजी-सत्कार
8-छोर-किनारा
9-भावभीनी-प्रेमभरी
10-आघात-चोट,प्रहार
11-अप्रत्याशित-अनसोचा
12-मार्मिक-मन को छूनेवाला
13-सामीप्य-निकटता
14-औपचारिक-दिखावटी
15-निर्मूल-बिना जड का
16-किंलो-कोनों से
17-सौहार्द-सरल भाव से
18-ऊष्मा-उग्रता ,गर्मी

Þ-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है?

1-अतिथि लेखक के घर चार दिनों से अधिक समय तक रहता है।

2. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही हैं?

2-कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही थी।

3. पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

3-पति ने स्नेह से भीगी मुस्कान के साथ गले मिलकर और पत्नी ने आदर से नमस्ते करके उनका स्वागत किया।

4. दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई?

4-दोपहर के भोजन को लंच की तरह शानदार बनाकर लंच की गरिमा प्रदान की गई।

5. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

5-तीसरे दिन अतिथि ने कपड़े धुलवाने हैं कहकर धोबी के बारे में पूछा।

6. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

6-सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लंच डिनर की जगह खिचड़ी बनने लगी। खाने में सादगी आ गई और अब भी अतिथि नहीं जाता तो उपवास तक रखना पड़ सकता था।

7-लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?

7-लेखक अतिथि को एक भावभीनी विदाई देना चाहता था। वह चाहता था कि जब अतिथि जाए तो पति-पत्नी उसे स्टेशन तक छोड़ने जाए। उन्हें सम्मानजनक विदाई देना चाहते थे परंतु उनकी यह मनोकामना पूर्ण नहीं हो पाई।

***-व्याख्या कीजिए–**

1-**अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया, व्याख्या कीजिए –**

1-जब लेखक ने अनचाहे अतिथि को आते देखा तो उसे महसूस हुआ कि खर्च बढ़ जाएगा। इसी को बटुआ काँपना कहते हैं।

2-अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

2-अतिथि जब आता है तो देवता जैसा प्रतीत होता है। अतिथि जब बहुत दिनों तक किसी के घर ठहर जाता है तो 'अतिथि देवो भव' का मूल्य नगण्य हो जाता है। आने के एक दिन बाद वह सामान्य हो जाता है अर्थात् इतना बुरा भी नहीं लगता इसलिए इसे मानव रुप में कहा है और ज़्यादा दिन रह जाए तो राक्षस जैसा प्रतीत होता है अर्थात् बुरा लगने लगता है।

3-लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें।

3-हर व्यक्ति अपने घर में सुख-शांति बनाए रखना चाहता है। अपने घर को स्वीट होम बनाए रखना चाहता है परन्तु अनचाहा अतिथि आकर उसकी इस मिठास को खत्म कर देता है। असुविधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। उनका आचरण दूसरों के जीवन को उथल-पुथल कर देता है। यह दूसरों के घर की सरसता कम करने का कारण बन जाते हैं।

4-मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।

4- अतिथि यदि एक दो दिन ठहरे तो उसका आदर सत्कार होता हैं परंतु अधिक ठहरे तो वह देवत्व को खोकर राक्षसत्व का बोध कराने लगता है। अतिथि चार दिन से लेखक के घर रह रहा था। कल पाँचवा दिन हो जाएगा। यदि कल भी अतिथि नहीं गया तो लेखक अपनी सहनशीलता खो बैठेगा और अतिथि सत्कार भूलकर कुछ गलत न बोल दे।

5- एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

5-यदि अतिथि को देवता माना जाए तो वह मनुष्य के साथ ज़्यादा नहीं रह सकता। दोनों को सामान्य मनुष्य बनना पड़ेगा। देवता की पूजा की जाती है। देवता तो थोड़ी देर के लिए दर्शन देकर चले जाते हैं क्योंकि देवता यदि अधिक समय तक ठहरे तो उसका देवत्व समाप्त हो जाएगा।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

1-कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर:- जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। लेखक ने उसके साथ मुस्कुराकर बात करना छोड़ दिया, बातचीत के विषय समाप्त हो गए। सौहार्द व्यवहार अब बोरियत में बदल गया। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था। इसके बाद लेखक उपवास तक जाने की तैयारी करने लगा। लेखक अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने के लिए तैयार हो गया।

2-'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना' – इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर:- 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना' – इस पंक्ति का आशय है संबंधों में परिवर्तन आना। जो संबंध आत्मीयतापूर्ण थे अब घृणा और तिरस्कार में बदलने लगे। जब लेखक के घर अतिथि आया था तो उसके संबंध सौहार्द पूर्ण थे। उसने उसका स्वागत प्रसन्नता पूर्वक किया था। लेखक ने अपनी ढ़ीली-ढ़ाली आर्थिक स्थिति के बाद भी उसे शानदार डिनर खिलाया और सिनेमा दिखाया। लेकिन अतिथि चार पाँच दिन रुक गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था।

3-जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर:- जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। लेखक ने उसके साथ मुस्कुराकर बात करना छोड़ दिया, बातचीत के विषय समाप्त हो गए। सौहार्द व्यवहार अब बोरियत में बदल गया। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था। इसके बाद लेखक उपवास तक जाने की तैयारी करने लगा। लेखक अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने के लिए तैयार हो गया।

(व्याकरण)

***-निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए –**

(क) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)

(क)हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने नहीं जाएँगे।

(ख) किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं,जल्दी धुल जाएँगे। (प्रश्नवाचक वाक्य)

(ख) किसी लॉण्ड्री पर दे देने से क्या जल्दी धुल जाएँगे?

(ग) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। (भविष्यत् काल)

(ग) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाएगी।

(घ) इनके कपड़े देने हैं। (स्थानसूचक प्रश्नवाची)

(घ) इनके कपड़े यहाँ देने हैं।

(ङ) कब तक टिकेंगे ये? (नकारात्मक)

(ङ) ये अब नहीं टिकेंगे।

*-पाठ में आए इन वाक्यों में 'चुकना' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए –

(क) तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके।

(ख) तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके।

(ग) आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।

(घ) शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए।

(ङ) तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

उत्तर:- पाठ में आए इन वाक्यों में 'चुकना' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए –

(क) तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी जमीन पर अंकित कर चुके।

(ख) तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके।

(ग) आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।

(घ) शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए।

(ङ) तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

*-निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए –

(क) लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।

(ख) तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।

(ग) तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।

(घ) कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।

(ङ) भावनाएँ गलियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

उत्तर:- निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए –

(क) लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।

(ख) तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।

(ग) तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।

(घ) कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।

(ङ) भावनाएँ गलियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

(लेखन भाग)

1-इंटरनेट का उपयोग पर निबंध:-

इंटरनेट ने लोगों के जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया है। घर हो या ऑफिस इंटरनेट को कई कारणों से हर जगह इस्तेमाल किया जाता है। इंटरनेट के कुछ उपयोगों में संचार, खरीदारी, बुकिंग, शोध और अध्ययन शामिल हैं। इंटरनेट इन दिनों हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इसने लोगों को काफ़ी करीब ला दिया है। चाहे वे आपके दोस्त हो, परिवार के सदस्य या आपके व्यापार के सहयोगी - हर कोई सिर्फ एक क्लिक दूर है यह बताने के लिए कि हमारे पास इंटरनेट है और यह इंटरनेट का मात्र एक उपयोग है।

इंटरनेट ने कई बदलाव लाए हैं। जिस तरह से हम रहते हैं और अपने विभिन्न कार्य करते हैं इसने इन सबको बदल के रख दिया है। इंटरनेट अपने कई उपयोगों के लिए जाना जाता है और इसने लगभग हर

क्षेत्र को प्रभावित किया है। आज लगभग सभी चीजें ऑनलाइन हो गई है। यात्रा और पर्यटन ऐसे क्षेत्रों में से एक है जिस पर इंटरनेट का भारी प्रभाव पड़ा है।

इंटरनेट ने यात्रा करने के तरीकों को बदल दिया है

इंटरनेट के उपयोग ने जिस तरह से हम यात्रा करते हैं उसमें बड़े पैमाने पर बदलाव किया है। अब आपको बस स्टैंड या रेलवे स्टेशन जाकर टिकट बुक करने के लिए लंबे समय तक कतार में खड़े रहने की आवश्यकता नहीं है। ऑनलाइन बुकिंग पोर्टल्स ने आपके लिए इस काम को कम किया है। होटल बुकिंग के मामले में यही मामला है। अब इसमें किसी प्रकार की कोई उलझन नहीं है कि आपको अच्छा होटल मिलेगा या नहीं जब आप छुट्टी के लिए कही बाहर जाएंगे। आप बिना किसी परेशानी के ऑनलाइन अपनी पसंद के होटल को बुक कर सकते हैं। किसी दूसरे शहर की यात्रा करना अब किसी तरह की परेशानी नहीं रह गई है चाहे वह व्यापार यात्रा हो या घूमने के लिए यात्रा हो। इसका कारण यह है कि आप पहले ही उन जगहों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। तो अब आप किसी जगह से अनजान नहीं रहेंगे और अपनी यात्रा को अधिक व्यवस्थित करने के लिए पहले योजना बना सकते हैं।

यात्रा और पर्यटन उद्योग को इंटरनेट से लाभ मिला है

यात्रियों की तरह यात्रा और पर्यटन उद्योग को भी इंटरनेट के उपयोग के साथ बहुत लाभ मिला है। इंटरनेट ने पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दिया है। चूंकि लोगों के मन में पहले से एक स्पष्ट तस्वीर होती है कि वे कहाँ जा रहे हैं और कैसे वहां आनंद लेंगे इसलिए यात्रा की योजना बनाने में हिचकिचाहट की कोई गुंजाईश नहीं है। दुनिया भर में अधिक से अधिक लोग इन दिनों यात्रा कर रहे हैं।

यात्रियों को प्रोत्साहित करने के लिए इंटरनेट पर कई यात्रा पैकेज भी जारी किए गए हैं। छोटे होटल जिनका पहले किसी को पता नहीं था इंटरनेट का इस्तेमाल अपने प्रचार और लाभ के लिए कर रहे हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इंटरनेट के इस्तेमाल से होटल, पर्यटन स्थलों और पर्यटन उद्योगों को भी फ़ायदा हुआ है। यह लोगों को यात्रा करने और नई-नई जगह तलाशने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा पर्यटन उद्योग को भी ऊंचाइयों पर ले गया है।

---

p5- leqn :-

देर रात तक लाउडस्पीकर का इस्तेमाल रोकने पर शिकायती पत्र

सेवा में,

श्रीमान वरिष्ठ सोसायटी अध्यक्ष,

जबलपुर

विषय- देर रात तक ध्वनि यंत्रो (लाउडस्पीकर) का इस्तेमाल करने पर शिकायत पत्र

महोदय,

निवेदन है की मैं निकुंज सोसायटी में रहने वाला ब्लॉक- बी का सदस्य हूँ. आज कल देर रात में कई घंटो तक बहुत जोरो से लाउडस्पीकर बजाया जा रहा है. ऐसा करना सार्वजनिक हित के खिलाफ है, जिससे मेरे परिवार के सदस्यों और इस फ्लोर के कई सदस्यों को काफी परेशानियाँ हो रही है. हम सभी ब्लॉक- बी के सदस्यों ने उन्हें ठीक तरह से समझा दिया है, लेकिन फिर भी वह बच्चे अपनी बदमाशी नहीं छोड़ रहे है. मैं आपको बताना चाहता हूँ की मेरे परिवार में कुल 6 सदस्य है. मेरे माता-पिता, मेरी पत्नी और मेरे 2 छोटे बच्चे है. मेरे बुजुर्ग माता-पिता इस शोर के कारण ठीक से सो रही पाते है. और मेरे छोटे बेटे की परीक्षा होने के कारण वह अपनी पढ़ाई पर इन ध्वनि यंत्रो के जोर जोर से बजने के कारण ध्यान नहीं लगा पा रहा है. मैं और मेरी पत्नी दोनों ही जॉब करते है, लेकिन रात में इन बच्चों की शैतानी के कारण हम लोगो को कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है. यह सिर्फ मेरी ही परेशानी नहीं है बल्कि ब्लॉक- बी में रहने वाले सभी सदस्यों को इस परेशानी का सामना करना पड़ रहा है. अतः महोदय मैं सभी लोगो की तरफ से आपसे निवेदन करता हूँ की आप इस परेशानी को जल्दी से जल्दी सुलझाने का प्रयास करे.

नीचे उन सभी सदस्यों के नाम और हस्ताक्षर है, जिन्हें इस परेशानी का सामना करना पड़ रहा है.

सोसायटी के सदस्यों के नाम और हस्ताक्षर

1. नमन शर्मा
2. प्रोयोग मिश्रा
3. संदीप चौहान
4. मोनू कदम
5. जानकी माथुर
6. कंदर्प सोलंकी

धन्यवाद,

अपूर्व मिश्रा

निकुंज सोसायटी

“ब्लॉक- बी”- 32

----

iv)apn- leq:-hel me heuiv)apn-

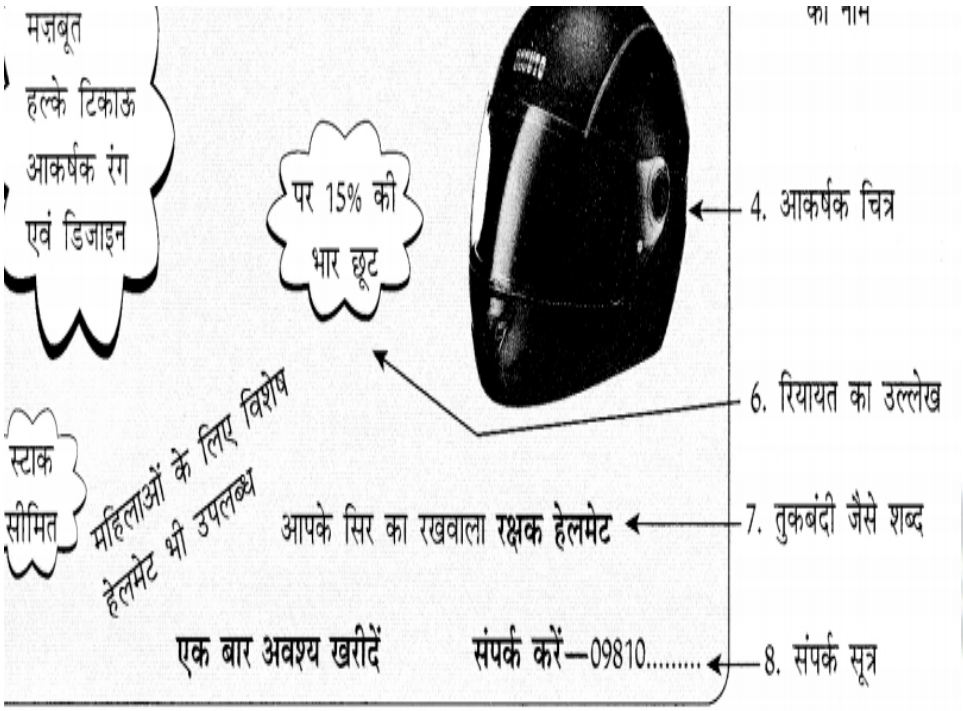

संचयन-गद्य-भाग

पाठ-2

(स्मृति) (श्री राम शर्मा)

⁎-परिचय और सार:-पं० श्रीराम शर्मा द्वारा रचित लेख 'स्मृति' एक संस्मरणात्मक लेख है, जो साहसिक एवं शिकार कथा पर आधारित है। यह पं० श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित 'शिकार' नामक पुस्तक से संकलित है जिसमें लेखक ने अपने बचपन की रोमांचकारी घटना का वर्णन किया है। सन् 1908 ई० में दिसंबर या जनवरी के महीने में शाम के साढ़े तीन या चार बजे जब लेखक अपने छोटे भाई के साथ झरबेरी से बेर तोड़कर खा रहा था, उन्हें (लेखक को) उनके बड़े भाई ने बुलवाया। लेखक पिटाई के भय से डर गया, परंतु भाई साहब ने लेखक को मक्खनपुर डाकखाने में पत्र डालने के लिए दिए जो बहुत आवश्यक थे। लेखक अपने छोटे भाई के साथ अपने-अपने डंडे लेकर व माँ के दिए चने लेकर चल दिए। लेखक ने पत्रों को अपनी टोपी में रख लिया क्योंकि उनके कुर्ते में जेबें न थी। मार्ग में दोनों भाई उस कुएँ के पास पहुँचे जो कच्चा था तथा जिसमें एक अतिभयंकर काला साँप था। प्रतिदिन लेखक व उसके मित्र कुएँ में ढेला फेंककर साँप की क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाते थे। आज भी लेखक के मन में साँप की फुसकार सुनने की इच्छा जाग्रत हुई। लेखक ने एक ढेला उठाया और एक हाथ से टोपी उतारकर कुएँ में गिरा दिया। लेखक के टोपी हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ जो टोपी में रखी थीं चक्कर काटती हुए कुएँ में गिर गई। निराशा व पिटने के भय से दोनों भाई कुएँ के पाट पर बैठकर रोने लगे। लेखक का मन करता कि माँ आकर गले लगाकर कहे कोई बात नहीं या घर जाकर झूठ बोल दे, परंतु लेखक झूठ

बोलना नहीं जानता था तथा सच बताने पर उसे पिटाई का भय था, तब लेखक ने कुएँ मे घुसकर चिट्ठियाँ निकालने का दृढ़ निश्चय किया। लेखक ने अपनी व भाई की धोतियाँ तथा रस्सी बाँधी और रस्सी के एक सिरे पर डंडा बाँधकर कुएँ में डाल दिया तथा दूसरा सिरा कुएँ की डेंग से बाँध दिया और स्वयं धोती के सहारे कुएँ मे घुस गया। कुएँ में धरातल से चार-पाँच गज की ऊँचाई से लेखक ने देखा कि साँप उसका मुकाबला करने के लिए फन पैâलाकर तैयार था। लेखक को साँप को मारने व चिट्ठियाँ लेने के लिए कुएँ के धरातल पर उतरना ही था क्योंकि चिट्ठियाँ वहीं गिरी हुई थी। जैसे-जैसे लेखक नीचे उतरता वैसे-वैसे उसका चित्त एकाग्र होता जाता। कच्चे कुएँ का व्यास कम होता है इसलिए डंडा चलाने के लिए पर्याप्त स्थान न था। तभी लेखक ने साँप को न छेड़ने का निर्णय लिया। लेखक ने डंडे से चिट्ठियाँ सरकाने का प्रयास किया और साँप की फुसकार से लेखक के हाथ से डंडा छूट गया। लेखक ने दूसरा प्रयास किया और साँप डंडे से चिपट गया। डंडे के लेखक की ओर खिंच आने से साँप की मुद्रा बदल गई और लेखक ने लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए। लेखक ने चिट्ठियों को धोती से बाँध दिया, जिसे छोटे भाई ने ऊपर खींच लिया तथा डंडा उठाकर हाथों के सहारे ऊपर चढ़ गया। ऊपर आकर वह थोड़ी देर पड़ा रहा तथा किशनपुर के जिस लड़के ने उसे ऊपर चढ़ते देखा था उसे कहा कि इस घटना के बारे में किसी से न कहे। सन 1915 में मैट्रीक्युलेशन उत्तीर्ण करने के बाद लेखक ने यह घटना अपनी माँ को बताई और माँ ने लेखक को अपनी गोद में छुपा लिया।

⁎-शब्दार्थ:-

1-आखिर-अंतिम
2-चिल्ला-कड़ी सर्दी
3-भुंजाना-भुनवाना
4-झरे-तोडना
5-दुधारी-दोनों तरफ धारवाली
6-आश्वासन-भरोसा
7-घटक-नुकसानदायक
8-सूझ-तरकीब
9-पैतरा-स्थिति
10-अवलंबन-सहारा
11-कायल-मानना
12-धौंकनी-तेज धडकना
13-वार-प्रहार-मार
14-डैने -पंख

⁎-प्रश्न-उत्तर:-

1. भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

उत्तर:- जब लेखक झरबेरी से बेर तोड़ रहा था तभी एक आदमी ने पुकार कर कहा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र चले आओ। यह सुनकर लेखक घर की ओर लौटने लगा। पर लेखक के मन में भाई साहब की मार का डर था। इसलिए वह सहमा-सहमा जा रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उससे कौन-सा कसूर हो गया। उसे आशंका थी कि कहीं बेर खाने के अपराध में उसकी पेशी न हो रही हो। वह अज्ञात डर से डरते-डरते घर में घुसा।

2. मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

उत्तर:- मक्खनपुर पढ़ने जाने वाले बच्चों की टोली पूरी वानर टोली थी। उन बच्चों को पता था कि कुएँ में साँप रहता है। लेखक ढेला फेंककर साँप से फुसकार करवा लेना बड़ा काम समझता था। बच्चों में ढेला फेंककर फुसकार सुनने की प्रवृत्ति जाग्रत हो गई थी। कुएँ में ढेला फेंककर उसकी आवाज तथा उससे सुनने के बाद अपनी बोली सुनने की प्रतिध्वनि सुनने की लालसा उनके मन में रहती थी।

3. 'साँप ने फुफकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं' – यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर:- यह घटना १९०८ में घटी थी और लेखक ने इसे अपनी माँ को १९१५ में सात साल बाद बताया था। उन्होंने इसे लिखा तो और भी बाद में होगा। अतः उन्हें पूरी घटना का स्मरण नहीं।लेखक ने जब ढेला उठाकर कुएँ में साँप पर फेंका तब टोपी में रखी चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई। यह देखकर दोनों भाई घबरा गए और रोने लगे। लेखक को भाई की पिटाई का डर था।तब उन्हें माँ की गोद याद आ रही थी। अब वह और भी भयभीत हो गए थे। इस वजह से उन्हें यह बात अब याद नहीं कि 'साँप ने फुफकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं'।

4**. किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?**

उत्तर:- लेखक को चिट्ठियाँ बड़े भाई ने दी थी। डाकखाने जाते वक्त जैसे ही कुआँ सामने आया और लेखक ने ढेला उठाकर कुएँ में साँप पर फेंका तब टोपी में रखी चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई।यह देखकर दोनों भाई घबरा गए और रोने लगे। लेखक को भाई की पिटाई का डर सताने लगा था। अब वह और भी भयभीत हो गए थे। इसी मनःस्थिति में उसने कुएँ से चिट्ठियों को निकालने का निर्णय लिया।

5. साँप का ध्यान बाँटने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाई?

उत्तर:- साँप का ध्यान बाँटने के लिए लेखक ने निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाई –

1. उसने डंडे से साँप को दबाने का ख्याल छोड़ दिया।
2. उसने साँप का फन पीछे होते ही अपना डंडा चिट्ठियों की ओर कर दिया और लिफाफा उठाने की चेष्टा की।
3. डंडा लेखक की ओर खीच आने से साँप का आसन बदल गया और लेखक ने तुरंत लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए और उन्हें अपनी धोती के छोर में बाँध लिया।

6. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- चिट्ठियाँ सूखे कुएँ में गिर पड़ी थीं। कुएँ में साँप था। कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ लाना बड़ा ही साहस का कार्य था। लेखक ने इस चुनौती का स्वीकार किया। लेखक ने छः धोतियों को जोड़कर डंडा बाँधा और एक सिरे को कुएँ में डालकर उसके दूसरे सिरे को कुएँ के चारों ओर घुमाने के बाद गाँठ लगाकर अपने छोटे भाई को पकड़ा दिया। लेखक इसी धोती के सहारे कुएँ में उतरा। जब वह धरातल के चार-पाँच गज उपर था, उसने साँप को फन फैलाए देखा। वह कुछ हाथ ऊपर धोती पकड़े लटका रहा ताकि वह उसके आक्रमण से बच जाए।

साँप को धोती पर लटककर मारना संभव नहीं था और डंडा चलाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। उसने डंडे से चिट्ठियों को खिसकाने का प्रयास किया कि साँप डंडे से चिपक गया। साँप का पिछला हिस्सा लेखक के हाथ को छू गया। लेखक ने डंडा फेंक दिया। डंडा लेखक की ओर खीच आने से साँप का आसन

बदल गया और लेखक ने तुरंत लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए और उन्हें अपनी धोती के छोर में बाँध लिया।

7. इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है?

उत्तर:- इस पाठ को पढ़ने के बाद निम्नलिखित बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है –

- बच्चे झरबेरी के बेर तोड़कर खाने का आनंद लेते हैं।
- स्कूल जाते समय रास्ते में शरारतें करते हैं।
- कठिन एंव जोखिम पूर्ण कार्य करते हैं।
- जानवरों एंव जीव-जन्तुओं को तंग करते हैं।
- कुएँ में ढेला फेंककर खुश होते हैं।
- माली से छिपकर फल तोड़ना पसंद करते हैं।
- गलत काम करने के बाद सज़ा मिलने से डरते हैं।

8. 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं'- का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- इस कथन का आशय है कि मनुष्य हर स्थिति से निपटने के लिए तरह-तरह के अनुमान लगता है और भावी योजनाएँ बनाता है। परंतु उसकी सारी योजनाएँ सफल नहीं होती। उसे कभी सफलता मिलती है तो कभी विफलता। इससे कई बार मनुष्य निराश हो जाता है। इस पाठ के लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के तरह तरह के अनुमान लगाए, योजनाएँ बनायीं और उसमे फेर-बदल भी करना पड़ा, अंततः उसे सफलता मिली।

9. 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है' – पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- मनुष्य तो कर्म करता है, पर उसे फल देने का काम ईश्वर करता है। मनचाहे फल को पाना मनुष्य के बस की बात नहीं है। यह तो उस शक्ति पर ही निर्भर करता है जो फल देती है। इस पाठ के लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के तरह-तरह के अनुमान लगाए, योजनाएँ बनायीं और उसमे फेर-बदल भी करना पड़ा, अंततः उसे सफलता मिली। गीता में भी कर्म के महत्व को दर्शाया गया है-'
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्'।

***-व्याकरण:-**

1-क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे क्रिया कहते है।

जैसे- पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि।

दूसरे शब्दों में - क्रिया का एक अर्थ कार्य करना होता है। जिन शब्दों या पदों से यह पता चले की कोई कार्य हो रहा है या किया जा रहा है उसे क्रिया कहते हैं।

1) पानी लाओ।
(2) चुपचाप बैठ जाओ।
(3) रुको।
(4) जाओ।

2) क्रिया का निर्माण धातू से होता है। जब धातू में ना लगा दिया जाता है, तब क्रिया बनती है।

3) **धातु -**

जिस मूल रूप से क्रिया को बनाया जाता है उसे धातु कहते है। यह क्रिया का ही एक रूप होता है। धातु को क्रिया का मूल रूप कहते हैं।

जैसे -खा + ना = खाना पढ़ + ना = पढ़ना

जा + ना = जाना लिख + ना = लिखना

व्याकरण:-

मुहावरे और लोकोक्ति का अर्थ :- (1) मुहावरा—मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—'अभ्यास'। हिन्दी में यह शब्द रूढ़ हो गया है, जिसका अर्थ है—"लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य, जो किसी एक ही बोली या लिखी जानेवाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो।"संक्षेप में ऐसा वाक्यांश, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, मुहावरा कहलाता है। इसे 'वाग्धारा' भी कहते हैं।

(2) लोकोक्ति-यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—'लोक' + 'उक्ति', अर्थात् किसी क्षेत्र-विशेष में कही हुई बात। इसके अन्तर्गत किसी कवि की प्रसिद्ध उक्ति भी आ जाती है। लोकोक्ति किसी प्रासंगिक घटना पर आधारित होती है। समाज के प्रबुद्ध साहित्यकारों, कवियों आदि द्वारा जब किसी प्रकार के लोक-अनुभवों को एक ही वाक्य में व्यक्त कर दिया जाता है तो उनको प्रयुक्त करना सुगम हो जाता है। ये वाक्य अथवा लोकोक्तियाँ (कहावतें, सूक्ति) गद्य एवं पद्य दोनों में ही देखने को मिलते हैं। इस प्रकार ऐसा वाक्य, कथन अथवा उक्ति, जो अपने विशिष्ट अर्थ के आधार पर संक्षेप में ही किसी सच्चाई को प्रकट कर सके, 'लोकोक्ति' अथवा 'कहावत' कही जाती है।

अँगूठी का नगीना-अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति अथवा वस्तु।
अकबर के नवरत्नों में बीरबल तो जैसे अंगूठी का नगीना थे।

अंग-अंग फूले न समाना-अत्यधिक प्रसन्न होना। राम के अभिषेक की बात सुनकर कौशल्या का अंग-अंग फूले नहीं समाया।

अंन्धी सरकार—विवेकहीन शासन।
कालाबाजारी खूब फल-फूल रही है, किन्तु अन्धी सरकार उन्हीं का पोषण करने में लगी है।

अन्धे की लाठी लकड़ी.होना-एकमात्र सहारा होना। निराशा में प्रतीक्षा अन्धे की लाठी है।

अक्ल का अन्धा-मूर्ख।
वह लड़का तो अक्ल का अन्धा है, उसे कितना ही समझाओ, मानता ही नहीं है।

इधर की उधर लगाना-चुगली करना।
अनेक लोग ऐसे होते हैं, जो इधर की उधर लगाकर लोगों में विवाद कराते रहते हैं।

ईंट से ईंट बजाना-हिंसा का करारा जवाब देना, खुलकर लड़ाई करना।
तुम मुझको कमजोर मत समझो, समय आने पर मैं ईंट से ईंट बजाने के लिए भी तैयार हूँ।

उड़ती चिड़िया पहचानना-दूर से भाँप लेना।
दारोगा ने सिपाही से कहा, "ऐसा अनाड़ी नहीं हूँ, उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ।"

ऊँट के मुँह में जीरा-बहुत कम मात्रा में कोई वस्तु देना।
मोहन प्रतिदिन दस रोटियाँ खाता है, उसे दो रोटियाँ देना तो ऊँट के मुँह में जीरा देने के समान है।

उल्टी गंगा बहाना—परम्परा के विपरीत काम करना।
सदैव उल्टी गंगा बहाकर समाज में वैचारिक क्रान्ति नहीं लाई जा सकती।

एक अनार सौ बीमार-एक वस्तु के लिए बहुत-से व्यक्तियों द्वारा प्रयत्न करना।
मेरे पास पुस्तक एक है और माँगनेवाले दस छात्र हैं। यह तो वही बात हुई कि एक अनार सौ बीमार।

कमर टूटना–हिम्मत पस्त होना।
पहले तो रमेश के पिताजी का स्वर्गवास हो गया और अब व्यापार में हानि होने से उसकी कमर टूट गई।

लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ –

-अन्त बुरे का बुरा-बुरे का परिणाम बुरा होता है।
-अन्धों में काना राजा-मूखो के समाज में कम ज्ञानवाला भी सम्मानित होता है।
-उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे-अपना दोष स्वीकार न करके उल्टे पूछनेवाले पर आरोप लगाना।
-एक तो करेला, दूसरे नीम चढ़ा-अवगुणी में और अवगुणों का आ जाना।
-घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने-झूठी शान दिखाना।
-तुम डाल-डाल हम पात-पात-प्रतियोगी से अधिक चतुर होना। अथवा प्रतियोगी की प्रत्येक चाल को विफल करने का उपाय ज्ञात होना।
-मुँह में राम बगल में छुरी-कपटपूर्ण व्यवहार।

व्याकरण :-

अव्यय /अविकारी शब्द:-

अव्यय / अविकारी शब्द:-

अविकारी शब्द – ऐसे शब्द जिनके स्वरुप में लिंग, वचन, काल आदि के प्रभाव से कोई विकार नहीं होता अर्थात् कोई परिवर्तन नहीं होता वे अविकारी शब्द कहलाते हैं |

अव्यय का शाब्दिक अर्थ है –

अ (नहीं) + व्यय (खर्च या परिवर्तन)

→ **जैसे** – यहाँ, वहाँ, धीरे, तेज, कब, और, तथा, एवं आदि |

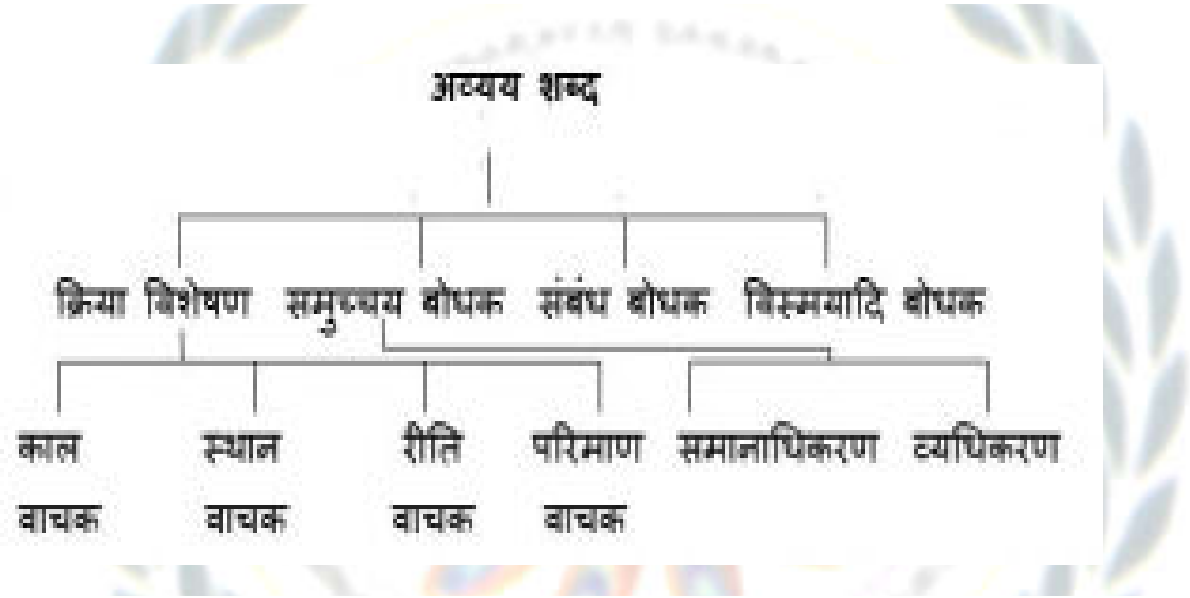

क्रिया विशेषण के भेद :-

- **रीतीवाचक क्रिया विशेषण**
- **स्थानवाचक क्रिया विशेषण**
- **कालवाचक क्रिया विशेषण**
- **परिमाणवाचक क्रिया विशेषण**

समुच्चय बोधक अव्यय:-

वे अव्यय शब्द, जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय या संयोजक शब्द कहते हैं |

जैसे → राम **और** मोहन विद्यालय गए |

→ गीता **और** सीता खाना खा रही है |

संबंध बोधक अव्यय:

वे अव्यय शब्द, जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ लगकर उसका सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्द से बताते हैं, उन्हें संबंध बोधक अव्यय कहते हैं |
जैसे → दूध के **बिना** बच्चा नहीं रह सकता |
→ गोलू दादा जी के **साथ** घूमने जाता है |

विस्मयादिबोधक अव्यय:-

वे अव्यय शब्द, जो आश्चर्य, विस्मय, शोक, घृणा, प्रशंसा, प्रसन्नता, भय आदि भावों का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं |
जैसे → अहा ! कितना सुन्दर दृश्य है |
→ जीते रहो ! दीर्घायु हो |

-संबंधबोधक और क्रिया विशेषण में अंतर – जब इनका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के साथ होता है तब वे संबंधबोधक अव्यय होते हैं और जब वे क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं तब क्रिया विशेषण होते हैं |
जैसे→
(i) दिनकर से आगे पुष्कर निकल गया | (संबंधबोधक)
पुष्कर दिनकर से आगे चला गया | (क्रिया विशेषण)
(ii) विनय कमरे के अंदर बैठा है | (संबंधबोधक)
विनय अंदर बैठा है | (क्रिया विशेषण)